RNI.No. — GUJHIN/2012/45192

सूरत भूमि

हिन्दी दैनिक

संपादक : संजय आर. मिश्रा

श्री 1008 महामंडलेश्वर
श्री स्वामी रामानंद दासजी महाराज
श्री रामानंद दास अन्नक्षेत्र सेवा ट्रस्ट, तपोवन आश्रम

स्व. पं. पू.1008 श्री रामानन्द जी
तपोवन मंदिर, मोरा गांव, सूरत

वर्ष-12 अंक:325 ता. 16 जून 2024, रविवार , कार्यालय:114, न्यु प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेंट, डिंडोली, डिंडोली, उधना सूरत (गुजरात) मो. 9327667842, 9825646069 पृष्ठ: 8 कीमत: 2:00 रुपये

ho@suratbhumi.com /Suratbhumi.com /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi /Suratbhumi

पहला कॉलम

भारतीय सिनेमा को 110 पूरे होने पर डाक विभाग ने जारी किया टिकट

-अमिताभ बच्चन बोले-फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन के लिए यह सम्मान की बात

नई दिल्ली। (एजेंसी)

भारत में फिल्म इंस्ट्रीज को 110 साल हो गए हैं। इस अवसर पर भारतीय डाक विभाग ने 2014-2024 को भारतीय सिनेमा की विरासत का संरक्षण करने का दशक घोषित किया है और स्पेशल डाक टिकट जारी किया। इस घोषणा पर इस सदी के महानायक और फिल्म अभिनेता अमिताभ बच्चन ने खुशी जताई है। साल 2014 में भारतीय सिनेमा ने अपने 100 साल पूरे किए थे। इसी साल फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन की स्थापना की गई थी। इस संस्था ने भारत की क्लासिक और ऐतिहासिक फिल्मों के संरक्षण पर काम शुरू हुआ। फिल्म हेरीटेज फाउंडेशन के इस मुहीम के ब्रांड एम्बेसडर बने हैं। वह हाल में हुए इवेंट में शामिल हुए और इस मुहीम की तारीफ की। अमिताभ बच्चन ने सोशल मीडिया अकाउंट पर कई तस्वीरों के साथ एक पोस्ट शेयर की। पहली दो तस्वीरों में डाक टिकट और और फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन पर बेस्ड पोस्टेज है। अमिताभ बच्चन ने लिखा कि भारतीय डाक विभाग की ओर से फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन के लिए यह सम्मान की बात है। भारतीय डाक विभाग ने फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन के अथक प्रयासों के सम्मान में एक विशेष कवर जारी किया है। अमिताभ बच्चन मुझे एक ऐसे संगठन का एम्बेसडर होने पर बहुत गर्व है जो फ्यचूर जनरेशन के लिए हमारी फिल्म विरासत को संरक्षित करने के लिए एक अटूट जुनून और कमिट से इंस्पायर है, जिसने पिछले दस सालों में हमारी लुप्त हो रही फिल्म विरासत को बचाए रखा, पुनर्स्थापित किया और प्रदर्शित भी किया है।

नागा संगठनों ने गृहमंत्री अमित शाह से अवैध म्यांमार अप्रवासियों को वापस भेजने का कहा

इंफाल ।

मणिपुर के कई नागा नागरिक निकायों और संगठनों ने गृह मंत्री अमित शाह से अवैध म्यांमार अप्रवासियों को उनके देश वापस भेजने के लिए कहा है। सूत्रों ने बताया कि नागा संगठनों ने इस सप्ताह की शुरुआत में गृह मंत्री को एक ज्ञापन सौंपकर अवैध म्यांमार अप्रवासियों को निर्वासित करने का अनुरोध किया था। ज्ञापन में बताया गया है कि म्यांमार से सटे मणिपुर के कामजोंग जिले के आठ तांगखुल गांवों में म्यांमार के लगभग 5,457 अवैध अप्रवासियों को शरण दी जा रही है और उनकी संख्या स्थानीय निवासियों से अधिक है। हाल ही में भारत-म्यांमार सीमा क्षेत्रों का दौरा करने के बाद यूनाइटेड नागा काउंसिल (यूएनसी), नागा महिला संघ (एनडब्ल्यूयू), ऑल नागा स्टूडेंट्स एसोसिएशन मणिपुर (एएनएसएएम) और नागा पीपुल्स मूवमेंट फॉर ह्यूमन राइट्स (एनपीएम-एचआर) ने गृह मंत्री को ज्ञापन सौंप कर यह मांग की थी। यूएनसी के एक नेता ने कहा कि अप्रवासियों का एक वर्ग अवैध और असामाजिक गतिविधियों में शामिल है और कानून लागू करने वाली एजेंसियां ऐसी गतिविधियों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में असमर्थ हैं। मणिपुर गृह विभाग के एक अधिकारी ने कहा कि राज्य सरकार ने विदेश मंत्रालय और केंद्रीय सुरक्षा बलों के साथ समन्वय में 8 मार्च से तीन चरणों में महिलाओं और बच्चों सहित 115 म्यांमार नागरिकों को निर्वासित किया है। म्यांमार के अप्रवासियों को मणिपुर के तेंगनौपाल जिले में मोरेह सीमा के माध्यम से निर्वासित किया गया है। मणिपुर की म्यांमार के साथ लगभग 400 किमी लंबी बिना बाड़ वाली सीमा है। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने पहले कहा था कि हालांकि भारत ने 1951 शरणार्थी सम्मेलन में हस्ताक्षर नहीं किया है, लेकिन उसने मानवीय आधार पर म्यांमार में संकट से भागने वालों को आश्रय और सहायता दी है। तीन साल से अधिक समय पहले, जब से सेना ने म्यांमार पर कब्जा किया है, तब से कम से कम 8,000 म्यांमारवासियों ने मणिपुर के तेंगनौपाल, चंदेल, चुराचांदपुर और कामजोंग जिलों में शरण ली है, जबकि 36,000 से अधिक लोगों ने मिजोरम में शरण ली है। गृह मंत्रालय (एमएचए) की सलाह के बाद, मणिपुर सरकार राज्य में शरण लिए हुए म्यांमार के नागरिकों का बायोमेट्रिक विवरण एकत्र कर रही है।

नागपुर में नाबालिग ने तेज रफ्तार कार से 5 लोगों को मारी टक्कर

नागपुर ।

महाराष्ट्र में एक बार फिर रफ्तार का कहर देखने को मिला है। नागपुर के नंदनवन इलाके में एक नाबालिग ने स्कोडा कार से सड़क के किनारे खड़े 5 लोगों को टक्कर मार दी, जिनमें से दो लोगों का अब भी अस्पताल में इलाज चल रहा है, जबकि 3 को प्राथमिक उपचार के बार घर जाने दिया गया है। गैरेज में काम करने वाला यह नाबालिग कार को पार्क करने की बजाय उसे सड़क पर दौड़ाने लगा। इस दौरान ब्रेक की बजाय उसका पैर एक्सीलेटर पर पड़ गया और कार बेकाबू होकर सड़क के किनारे खड़ी ठेला गाड़ी से टकरा गई। पुलिस ने नाबालिग को हिरासत में लेकर उसके रक्त के नमूने को जांच के लिए भेज दिया है और गैरेज मालिक और स्कोडा कार मालिक से भी पूछताछ कर रही है। ज्ञात रहे कि इससे पहले दोस्तों संग पार्टी करने गए पुणे के एक रईसजादे ने दो परिवार की खुशियों को पूरी तरह से उजाड़ दिया था। उसने अपनी महंगी लग्जरी कार से बाइक से जा रहे दो आईटी इंजीनियरों को जान ले ली थी।

सोम डिस्टलरी शराब फैक्ट्री पर छापा...

- बाल संरक्षण आयोग की टीम ने सेहतगंज में स्थित फेक्ट्री में की कार्यवाही

- 59 बच्चों को किया रेस्क्यू, इनमें 20 लाड़लिया भी
- स्कूल बस से ले जाकर करवाते थे मजदूरी
- केमिकल से गल गए मासूमों के हाथ

भोपाल । (एजेंसी)

मप्र के रायसेन **Raisen** जिले में सोम डिस्टलरी **Som Distilleries** शराब फैक्ट्री का शनिवार को राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग की टीम छापा मारा। यहां पर शराब फैक्ट्री में 59 बच्चे काम करते पाए गए। इनमें 20 लड़कियां भी शामिल हैं। काम करते-करते बच्चों के हाथों की चमड़ी तक गल गई थी। इन्हें स्कूल बस से फैक्ट्री में लाया जाता था। राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष प्रियंक कानूनगो ने बताया कि बचपन बचाओ आंदोलन एनजीओ की तरफ से शिकायत मिली थी। इसमें शराब फैक्ट्री में बच्चों से काम करने का मामला सामने आया। इसके बाद शनिवार को रायसेन जिले की सोम डिस्टलरी नामक शराब बनाने वाली फैक्ट्री में निरीक्षण किया गया। यहां 59 बच्चे शराब बनाने का काम करते हुए पाए गए हैं। इनमें 20 लड़कियां भी हैं। उन्होंने बताया कि शराब में बनाने में उपयोग होने वाले रसायनों के संपर्क में रहने से कई बच्चों के हाथ की चमड़ी भी जल चुकी है। बच्चों को रेस्क्यू करने एवं एफआईआर दर्ज करने की कार्रवाई की जा रही है।

- आबकारी अधिकारी की मिलीभगत

कानूनगो ने आरोप लगाया कि ये आबकारी अधिकारी की मिलीभगत और उनकी आंखों के सामने हो रहा था। वह आंखें बंद कर बैठे थे। आबकारी अधिकारी के विरुद्ध कार्रवाई करने के लिए हम शासन को पत्र लिखेंगे। प्रियंका कानूनगो ने बताया कि बचपन बचाओ आंदोलन से शिकायत मिली थी कि इस फैक्ट्री में 15-16 घंटे बच्चों से शराब बनवाने का काम कराया जाता है। इन्हें लंबे समय से इस काम में लगाया गया था। फैक्ट्री के बाहर स्कूल बस खड़ी मिली।

एसडीओपी प्रतिभा शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग के पत्र के अनुसार कार्रवाई की जा रही है। बच्चों का सीडब्ल्यूसी के सामने वेरीफिकेशन किया गया है। अभी जांच में समय लगेगा। उस आधार पर सोम फैक्ट्री के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की कार्रवाई की जाएगी। इससे पहले शुक्रवार को बाल संरक्षण आयोग की टीम ने रायसेन जिले के मंडीदीप में छापा मारा था। यहां बिस्किट बनाने वाली फैक्ट्री एलएम बेकर्स में 21 बाल श्रमिक मजदूरी करते मिले। यहां पारले जी बिस्किट बनाए जा रहे थे। कुल 3 संस्थानों से 36 बच्चों का रेस्क्यू किया गया। इनमें छिंदवाड़ा व अन्य राज्यों के आदिवासी बच्चे होने की जानकारी मिली है।

- आबकारी अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई करने नोटिस

आयोग की तरफ से सरकार को आबकारी अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई करने नोटिस जारी किया गया है। इस पूरे मामले में आबकारी अधिकारी की गंभीर लापरवाही सामने आई है। यह फैक्ट्री आबकारी विभाग की देखरेख में संचालित हो रही है। इसके परिसर में ही आबकारी अधिकारी का कार्यालय भी है। आयोग ने आबकारी अधिकारी के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिए सरकार को नोटिस जारी किया जा रहा है।

मोदीजी के पास जनादेश नहीं, यह अल्पमत की सरकार कभी भी गिर सकती है

-कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री पर साधा निशाना

नई दिल्ली। (एजेंसी)

देश में बीजेपी नीत एनडीए गठबंधन की सरकार सत्ता पर काबिज हो गई है जो विपक्ष को रास नहीं आ रही है। अब इसको लेकर विपक्ष तरह तरह की बातें कर रहा है। वहीं कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पीएम नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि केंद्र में गठबंधन सरकार गलती से बनी गई है और वह कभी भी गिर सकती है। लोकसभा चुनावों में बीजेपी को 240 सीटें मिली थी और वह बहुमत हासिल नहीं कर सकी थी। बीजेपी नीत घटक दलों यानी एनडीए को पूर्ण बहुमत मिला है।

खड़गे ने कहा है कि एनडीए सरकार गलती से बन गई है। मोदीजी के पास जनादेश नहीं है। यह अल्पमत की सरकार है। यह सरकार कभी भी गिर सकती है। हम चाहते हैं कि यह सरकार चलती रहे। देश के लिए यह अच्छा हो। हमें सरकार के साथ मिलकर देश को मजबूत बनाने के लिए काम करेंगे लेकिन हमारे पीएम मोदी की आदत है कि वे किसी चीज को चलने नहीं देते।

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे के कटाक्ष पर जेडीयू ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले इंडिया गठबंधन के प्रधानमंत्रियों के स्कोरकार्ड की याद दिलाई। बिहार के पूर्व आईपीआरडी मंत्री और जेडीयू एमएलसी नीरज कुमार ने खड़गे की जानकारी पर सवाल उठाया। उन्होंने उनसे पीवी नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह की कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकारों के स्कोरकार्ड के बारे में पूछा। 1991 के आम चुनाव में कांग्रेस ने 2024 में बीजेपी के बराबर सीटें जीती थीं। जब कोई पार्टी बहुमत हासिल नहीं कर पाई, तो कांग्रेस ने रिटायर हो चुके नरसिम्हा राव के नेतृत्व में अल्पमत की सरकार बनाई। कांग्रेस पार्टी किसी तरह सरकार बनाने में कामयाब रही। नरसिम्हा राव ने गुपचुप छोटी पार्टियों में फूट डाली और दो साल में अल्पमत वाली कांग्रेस को बहुमत वाली पार्टी में बदल दिया।

नीरज कुमार ने पूछा कि क्या खड़गे कांग्रेस की विरासत से अनभिज्ञ हैं। कांग्रेस अब 99 के चक्कर में फंस गई है। वहीं राजद प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा कि खड़गेजी सही कह रहे हैं। जनादेश मोदी सरकार के खिलाफ था। मतदाताओं ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। फिर भी वे सत्ता में आए।

यूक्रेन शांति शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाला भारत एकमात्र एशियाई देश

-रूस को नहीं भेजा निमंत्रण, चीन और पाकिस्तान भी नहीं होंगे शामिल

नई दिल्ली। स्विट्जरलैंड में आयोजित होने वाले यूक्रेन शांति शिखर सम्मेलन में भारत भी शामिल होगा। इस सम्मेलन में भाग लेने वालें देशों की सूची के मुताबिक भारत एकमात्र दक्षिण एशियाई देश है जो सम्मेलन में शिरकत करेगा। कुल 90 से ज्यादा देशों ने शिखर सम्मेलन में अपनी भागीदारी की पुष्टि की है। इनमें आधे यूरोप से हैं। संयुक्त राष्ट्र समेत कई संगठन भी सम्मेलन में शामिल होंगे। रूस को इसमें नहीं बुलाया गया है जबकि चीन और पाकिस्तान इसमें शामिल नहीं हो रहे हैं। भारत का प्रतिनिधित्व विदेश मंत्रालय में सचिव पवन कपूर करेंगे। वहीं चीन ने इस सम्मेलन में भाग लेने से इनकार करते हुए कहा है कि चूंकि रूस बैठक में शामिल नहीं होगा, इसलिए शांति शिखर सम्मेलन में यूक्रेन की एकतरफा मौजूदगी निरर्थक है। चीन ने कहा है कि सम्मेलन की बजाय यह यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेस्की के लिए अपने शांति सूत्र को बढ़ावा देने का एक मंच है। ब्रिटेन के पीएम ऋषि सुनक, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज, अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हैरिस, जापान के पीएम फूमियो किशिदा और कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो सम्मेलन में शामिल होंगे। शिखर सम्मेलन का उद्देश्य यूक्रेन में शांति की राह तैयार करना है।

एफएसएसएआई ने एमडीएच और एवरेस्ट मसाला कंपनियों के खिलाफ जांच शुरू की

नई दिल्ली । (एजेंसी)

एफएसएसएआई ने एमडीएच और एवरेस्ट मसाला कंपनियों के खिलाफ जांच शुरू कर दी है। एक रिपोर्ट में कहा गया है कि एफएसएसएआई ने राजस्थान स्टेट फूड एंड सेफ्टी डिपार्टमेंट की रिपोर्ट का संज्ञान लेते हुए दोनों कंपनियों के खिलाफ यह कार्रवाई शुरू की है।

हालांकि एमडीएच और एवरेस्ट ने दावा करते हुए कहा है कि उनके उत्पाद उपभोग के लिए सुरक्षित हैं। रिपोर्ट के मुताबिक इससे पहले एफएसएसएआई ने जांच के लिए खास मुहिम चलाने का दिया आदेश दिया था।

कहा गया है कि इस जांच के हिस्से के रूप में कैंसर के लिए जिम्मेदार के मिकल एथिलीन ऑक्साइड की भी जांच होगी। क्योंकि भारत में एथिलीन ऑक्साइड के इस्तेमाल पर पूरी तरह से रोक है। स्टेट फूड एंड सेफ्टी डिपोर्टमेंट ने एमडीएच और एवरेस्ट के मसालों को असुरक्षित पाया है।

राजस्थान सरकार को दोनों कंपनियों द्वारा बेचे जाने वाले कई मसालों में पेस्टिसाइड और इंसेक्टिसाइड की अधिक मात्रा मिली थी। राजस्थान के मेडिकल हेल्थ एंड फैमिली वेलफेयर डिपार्टमेंट की एडिशनल चीफ सेक्रेटरी शुभ्रा सिंह ने एफएसएसएआई को मसालों में दोषों के बारे में जानकारी दी थी। राज्य के अधिकारियों ने इसके चलते 12,000 किलोग्राम कई मसालों को जब्त किया है। वहीं स्टेट फूड डिपार्टमेंट द्वारा मई में मसालों के नमूने एकत्र किए थे। बीते अप्रैल में हांगकांग ने एमडीएच द्वारा उत्पादित 3 मसाला मिश्रणों और एवरेस्ट द्वारा उत्पादित एक मसाला मिश्रण की बिक्री को निलंबित कर दिया था। उनमें कैंसर पैदा करने वाले कीटनाशक एथिलीन ऑक्साइड की उच्च मात्रा थी जिससे भारत और अन्य बाजारों में नियामकों द्वारा जांच शुरू हुई।

सिंगापुर ने भी एवरेस्ट मिश्रण को वापस भेजने का आदेश दिया था जबकि न्यूजीलैंड, संयुक्त राज्य अमरीका और ऑस्ट्रेलिया ने कहा है कि वे इस मुद्दे पर विचार कर रहे हैं। ब्रिटेन ने दुनिया के सबसे बड़े निर्यातक उत्पादक और मसालों के उपभोक्ता भारत से आने वाले सभी मसालों पर अतिरिक्त नियंत्रण लागू किया है।

दिल्ली में जल संकट के लिए टैंकर माफिया जिम्मेदार : केजरीवाल सरकार

नई दिल्ली ।(एजेंसी)

देश की राजधानी दिल्ली में पानी का संकट बहुत ज्यादा है। केजरीवाल सरकार का कहना है कि दिल्ली में इस समय रोजाना 50 मिलियन गैलन पानी की शॉर्टेज है। पानी के सिर्फ एक-दो टैंकर पर पूरी कॉलोनी को निर्भर रहना पड़ रहा है। जब यह मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंचा और जल संकट पर घंटों सुनवाई भी हुई है। इधर हालात का कोई स्थायी उपाय निकालने की बजाय सियासत गरमा गई है। केजरी सरकार का कहना है कि इस जल संकट के लिए टैंकर माफिया जिम्मेदार है। वहीं बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष ने वीरेंद्र सचदेवा ने कहा कि दिल्लीवासी आम आदमी की सरकार को जल्द से जल्द हटाएं। वहीं जलसंकट मामले में हिमाचल सरकार भी अपने बयान से पलट गई है और सप्लाई करने से उसने इनकार कर दिया है। हिमाचल प्रदेश की कांग्रेस सरकार कहना है कि हमारे पास दिल्ली को देने के लिए 137 क्यूसेक अतिरिक्त पानी नहीं है। इससे पहले हिमाचल प्रदेश ने कहा था कि वो अतिरिक्त 137 क्यूसेक पानी दिल्ली को सप्लाई करेगा, लेकिन अब कहा है कि उनके पास अतिरिक्त

पानी नहीं है। दिल्ली अपनी 90 प्रतिशत से ज्यादा पेयजल आपूर्ति के लिए पड़ोसी राज्य हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश पर बहुत अधिक निर्भर है। इस आपूर्ति का लगभग 40 प्रतिशत यमुना नदी जैसे सोर्स से आता है। फिलहाल जल संकट का कोई समाधान निकलते नहीं दिख रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने आम आदमी पार्टी की सरकार से साफ कह दिया है कि वो इस मामले में अपर यमुना रिवर बोर्ड में जाएं और मानवीय आधार पर अतिरिक्त पानी की मांग करें। सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि राज्यों के बीच यमुना जल के बंटवारे से जुड़ा मामला जटिल है। अंतरिम आधार पर फैसला लेने के लिए कोर्ट के पास कोई तकनीकि विशेषज्ञता नहीं है।

आतंकी हमले के अंदेशे के चलते सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम

- अमरनाथ यात्रा को लेकर केंद्र गंभीर

जम्मू । (एजेंसी)

29 जून से शुरू होने वाली वार्षिक अमरनाथ यात्रा पर केंद्र सरकार गंभीर है क्योंकि यात्रा पर आतंकवादी किसी बड़े हमले को अंजाम दे सकते हैं। इसी को देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए जा रहे हैं। इस बार अमरनाथ यात्रियों की सुरक्षा के लिए अर्ध सैनिक बल की 500 कंपनियां तैनात की जाएंगी। अमरनाथ यात्रा पर सुरक्षा और जांच एजेंसियों के साथ गृह मंत्रालय ने अहम बैठक की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी यात्रा को लेकर काफी संवेदनशील हैं। जानकारी के अनुसार अमरनाथ यात्रियों की सुरक्षा के लिए जम्मू-कश्मीर प्रशासन कोई भी कोर-कसर छोड़ना नहीं चाहता है। सुरक्षा एजेंसियों ने अमरनाथ यात्रा के लिए बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की है जिसमें नाइट विजन डिवाइस, स्नाइपर्स, ड्रोन सिस्टम और यात्रा के दोनों मार्गों पहलगाम और बालटाल पर बम निरोधक दस्तों के जरिए रात में भी निगरानी होगी। अमरनाथ यात्रियों के लिए सेना, पुलिस, बीएसएफ, एसएसबी और सीआरपीएफ सभी एक साथ मिलकर सुरक्षा करेंगे। जम्मू से लेकर पवित्र गुफा तक दोनों रास्तों पर कड़े सुरक्षा प्रबंध हैं। बालटाल और पहलगाम दोनों रास्तों पर चप्पे-चप्पे पर सुरक्षाकर्मी तैनात होंगे। वहीं सूत्रों के अनुसार सुरक्षा का अधिकतर जिम्मा सीआरपीएफ और जम्मू-कश्मीर पुलिस को सौंपा गया है। वहीं यात्रा को सुरक्षित और सरल करने के लिए नवीनतम तकनीकों और उपकरणों का उपयोग करते हुए रेडियो फ्रीक्वेंसी का भी उपयोग किया जाएगा। यात्रा करने वाले सभी यात्रियों की टैगिंग होगी जिससे यात्रियों की पोजीशन पता रहेगी और अधिकारियों को तीर्थयात्रियों के स्थान की निगरानी करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा हाई-टैक कमांड कंट्रोल सैंटर में लगभग 20 सरकारी विभागों के लोग दिन-रात उपस्थित रहेंगे। कंट्रोल सैंटर में काम करने वाले विभागों में जम्मू-कश्मीर पुलिस, सीआरपीएफ, एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, स्वास्थ्य, पीएचई, पीडीडी व दूरसंचार और कई अन्य विभागों के कर्मचारी शामिल होंगे। बेस कैंप से लेकर गुफा तक के सभी मार्गों पर हाई डेफिनिशन 360 डिग्री व्यू कैमरे भी लगाए हैं। बालटाल और चंदनबाड़ी बेस कैंप से महत्वपूर्ण स्थानों पर दर्जनों कैमरे लगाए गए हैं जिसकी सारी लाइव फीड कमिंड कंट्रोल सैंटर में आती रहेगी। वहीं मौसम विभाग ने कस्टमाइज्ड वेदर अपडेट सिस्टम भी लगाया है जो पल-पल मौसम की खबर देता रहेगा। वहीं पर्यटन विभाग जम्मू के निदेशक विवेकानंद राय और संयुक्त निदेशक सुनैना शर्मा मेहता ने अन्य अधिकारियों के साथ जम्मू के भगवती नगर में प्रथम आधार शिविर यात्री निवास का दौरा भी किया है। पर्यटन विभाग के अधिकारियों ने तीर्थयात्रियों की सुविधाओं के लिए किए जा रहे कार्यों का निरीक्षण कर यात्री निवास में पर्यटन विभाग ने तीर्थयात्रियों की सहायता के लिए एक टूरिस्ट रिसैप्शन सैंटर भी खोला है। इसके अलावा पर्यटन विभाग की ओर से अमरनाथ यात्रियों को तरह-तरह की सुविधाएं दी जाती हैं।

भारत में तीन साल में सबसे ज्यादा वित्तीय धोखाधड़ी के शिकार हुए लोग

302 जिलों में यूपीआई और क्रेडिट कार्ड पर हुआ सर्वे

नई दिल्ली। (एजेंसी)

आजकल साइबर धोखाधड़ी के मामले आए दिन सुनने को मिलते हैं। पिछले तीन सालों में करीब कई भारतीय वित्तीय धोखाधड़ी के शिकार हुए हैं। लोकल सर्किल्स द्वारा किए सर्वे से पता चलता है कि भारत में वित्तीय धोखाधड़ी आम बात हो गई है। इससे फ्रॉड की चिंताजनक तस्वीर सामने आई है। सर्वे में 302 जिलों के 23 हजार उत्तरदाताओं में से करीब आधे यानी 47 फीसदी लोग किसी न किसी तरह की वित्तीय धोखाधड़ी के शिकार हुए हैं। इन घटनाओं में यूपीआई और क्रेडिट कार्ड से जुड़े मामले सबसे ज्यादा हैं। हाल ही में हुए सर्वे में दो मुख्य क्षेत्रों यूपीआई और क्रेडिट कार्ड पर सर्वे हुआ। क्रेडिट कार्ड धोखाधड़ी शिकार हुए आधे से ज्यादा 53फीसदी उत्तरदाताओं ने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय व्यापारियों या वेबसाइटों द्वारा लगाए गए अनधिकृत शुल्कों की शिकायत की है। इस सर्वे में हिस्सा लेने वाले लोगों की एक बड़ी संख्या 36फीसदी ने यूपीआई के जरिए धोखाधड़ी वाले लेन-देन की भी सूचना दी है। सर्वे में यह बात सामने आई है कि कम रिपोर्टिंग दर ने समस्या को और बढ़ा दिया है। लोकल सर्कल्स का अनुमान है कि दस में से छह भारतीय अधिकारी तो वित्तीय धोखाधड़ी की शिकायत ही दर्ज नहीं कराते हैं। रिपोर्टिंग की कमी के कारण समस्या के सही पैमाने को ट्रैक करना और कार्रवाई करना मुश्किल हो जाता है। सर्वे में इस समस्या से निपटने के लिए कुछ उपाय भी बताए गए हैं, जिनकी मदद से लोग आसानी से बच सकते हैं। कंज्यूमर की सुरक्षा के लिए मजबूत सुरक्षा उपायों और धोखाधड़ी रोकथाम प्रणालियों को लागू करना जरूरी है। लोगों में जागरुकता फैलाना है ताकि उन्हें खुद की सुरक्षा करने के लिए सशक्त बनाया जा सके। सर्वे में आरबीआई के आंकड़ों की जानकारी दी गई है। वित्त वर्ष 2024 में धोखाधड़ी के मामलों का कुल आकड़ा 13,930 करोड़ रुपए था, जो पिछले साल के मुकाबले करीब आधा है। हालांकि मामलों की संख्या में 166फीसदी की चौंका देने वाली वृद्धि देखी गई है। वित्तीय धोखाधड़ी की बढ़ोतरी और कम रिपोर्टिंग दर को बताते हुए सर्वे में अधिकारियों और नागरिकों दोनों के लिए चेतावनी जारी की है। इस बढ़ते खतरे से निपटने के लिए मजबूत सुरक्षा उपायों को लागू करना और जागरूकता बढ़ाना जरुरी कदम हैं।

संक्षिप्त समाचार

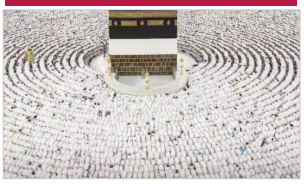

हज शुरु, लाखों की संख्या में मक्का पहुंचे हज यात्री

नई दिल्ली। सऊदी अरब के मक्का में स्थित हज, इस्लाम धर्म का तीर्थ स्थल है। यहां हर साल लाखों लोग हर करने सऊदी अरब के मक्का पहुंचते हैं। हज यात्रा के लिए हजयात्रियों का आना शुरू हो चुका है। हज का इस्लाम में बहुत बड़ा महत्व है। इस्लामिक कैलेंडर के मुताबिक अल-हिज्जा, जो कैलेंडर का 12वां यानी आखिरी महीना होता है, जिसके दूसरे हफ्ते में हज यात्रा शुरु होती है। यह यात्रा इद-अल-अजहा के तीन दिन बाद तक चलती है। चांद दिखने के बाद से ही पवित्र हज यात्रा का शुरु हो जाती है हज यात्रा, इस्लाम के पांच मुख्य स्तंभों में से एक है। इस्लामी मान्यताओं के मुताबिक, हज यात्रा अल्लाह (भगवान) के लिए अपना समर्पण दिखाने का एक तरीका है। हज का अरबी भाषा में मतलब होता है जियारत करना। ऐसा माना जाता है कि शारीरिक और आर्थिक रूप से मजबूत हर मुसलमान को अपने जीवन में एक बार हज जरूर करना चाहिए। अल्लाह के पैगंबर मुहम्मद साहब ने भी हज किया था, जिसे हज्जतुल-विदा के नाम से जाना जाता है। इसलिए हज खुद को अल्लाह से जोड़ने का एक बेहतरीन तरीका है। इस दौरान यात्रा की पवित्रता को बनाए रखने के लिए कई तरह के नियमों का ध्यान भी रखा जाता है।

नार्को-आतंकवादी नेटवर्क चलाने के आरोप में 03 लोग गिरफ्तार

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में सुरक्षा बलों ने तीन संदिग्धों को हिरासत में लेते हुए नार्को-आतंकवादी नेटवर्क का भंडाफोड़ करने का दावा किया है। इस मामले की जानकारी पुलिस ने आज शनिवार को ही दी है। मामले की जानकारी दे रही पुलिस ने बताया कि सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति हेरोइन बेचने की फिराक में यहां-वहां टहल रहा है। इस सूचना के आधार पर सेना के साथ मिलकर पुलिस ने करनाह कुपवाड़ा के सीमावर्ती इलाके में संयुक्त जाल बिछाने का कार्य किया। इसी बीच संदिग्ध दो लोगों को हिरासत में लिया गया, जिनकी तलाशी लेने पर उनके पास से लगभग 500 ग्राम हेरोइन जब्त की गई। दोनों संदिग्धों की पहचान खावरपारा करनाह के शफीक अहमद शेख और बागबल्ला के तारिक अहमद मलिक के तौर पर हुई है। पकड़े गए संदिग्धों की निशानदेही पर साधपुरा के परवेज अहमद पठान को भी हिरासत में ले लिया गया है। उसके कब्जे से तीन पिस्तौल, 76 पिस्तौल राउंड, छह पिस्तौल मैगजीन और लगभग पांच किलोग्राम संदिग्ध विस्फोटक भी बरामद किया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

पुलिस ने नीट पेपर लीक मामले में बिहार से करीब 19 लोगों को गिरफ्तार किया

पटना। नीट मामले में एक आरोपी ने कबूल किया है कि परीक्षा के दौरान सभी प्रश्न हूबहू थे। उसने बताया कि मेरे साथ 20 से 25 अन्य परीक्षार्थी भी मौजूद थे। बिहार पुलिस ने नीट पेपर लीक मामले में बिहार से करीब 19 लोगों को गिरफ्तार किया है। जिसमें से 14 लोगों को पटना से और करीब 4 लोगों को पूर्णिया से और एक को गोपालगंज से गिरफ्तार किया है। ये सभी आरोपी अन्य परीक्षार्थियों की जगह परीक्षा दे रहे थे। इस मामले में एक आरोपी आयुष ने कबूल किया है कि उनके सामने आए सभी प्रश्न हू ब हू थे। पुलिस को जले हुए पेपर मिले थे। इस मामले में पुलिस का कहना है कि फिलहाल ये क्लियर नहीं हुआ है कि जो जले हुए पेपर मिले हैं। वो लीक वाले थे या नहीं। क्योंकि इस मामले में अभी तक एनटीए ने कोई जवाब नहीं दिया है। नीट पेपर लीक मामले में पता चला है कि जो पेपर लीक होकर बिहार में आया था। वह मध्यप्रदेश और गुजरात से आया था। इस मामले में पुलिस ने सिकंदर नामक युवक से पूछताछ की तो उसने बताया कि सभी प्रश्न हू ब हू थे। उसी युवक ने पुलिस को अन्य आरोपियों तक पहुंचने का रास्ता भी बताया था।

यूपी में लू से 26 लोगों की मौत, फिलहाल राहत के आसार नहीं

लखनऊ। यूपी में आसमान से आग बरसाती धूप व झुलसा देने वाली लू से प्रदेश को फिलहाल राहत के आसार नहीं हैं। शुक्रवार को भी भीषण गर्मी के चलते बहराइच, बांदा, चित्रकूट और महोबा का एक-एक व्यक्ति समेत नहीं, पूर्वांचल के वाराणसी, मिर्जापुर, बलिया, गाजीपुर और कुशीनगर में 26 लोगों की मौत हो गई। मौसम विभाग ने कहा है कि लोगों को अभी ऐसी ही गर्मी झेलनी होगी। शुक्रवार को प्रयागराज 46.9 डिग्री सेल्सियस तापमान के साथ प्रदेश में सर्वाधिक गर्म रहा। कानपुर में मामूली सा बदलाव रहा, यहां पर तापमान 46.7 और हमीरपुर 46.2 डिग्री सेल्सियस रहा। प्रदेश के ज्यादातर शहर लू की चपेट में रहे। मौसम विभाग के मुताबिक 17 जून तक प्रदेश का मौसम शुष्क रहने के आसार व 25 से 35 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से हवा चलने के आसार हैं। वहीं, पूर्वी उत्तर प्रदेश में कुछ स्थानों पर गरज-चमक के साथ बौछारें पड़ सकती हैं।

गलवान घाटी में भारत-चीन के बीच हिंसक झड़प के चार साल पूरे

-विश्वास-निर्माण को लेकर दोनों देशों में बनी थी सहमति, बात अब भी वहीं रुकी

लद्दाख, (एजेंसी)

लद्दाख की गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच हुई हिंसक झड़प को चार साल हो चुके हैं, लेकिन सीमा गतिरोध अभी भी अनसुलझा है। पीएम नरेंद्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में एनडीए सरकार अब एक जटिल स्थिति का सामना कर रही है क्योंकि चीन अपनी स्थिति पर कायम है। 15-16 जून, 2020 को देर रात पूर्वी लद्दाख में भारतीय सेना और पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के बीच गलवान घाटी में झड़प में एक कर्नल सहित 20 भारतीय सैनिकों की मौत हो गई थी। आज उस हिंसक झड़प के चार साल पूरे हो चुके हैं। अप्रैल 2020 से पूर्वी लद्दाख में एलएसी पर तनाव बहुत ज्यादा था क्योंकि चीन ने दोनों देशों के बीच मौजूद सीमा प्रोटोकॉल को तोड़ते हुए सीमा पर बड़ी संख्या में सैनिकों को इकट्ठा कर दिया था। भारत सरकार के मुताबिक भारी संख्या में सैनिकों को इकट्ठा कर चीन ने कैलाश रेंज पर भारतीय सेना के कुछ प्रमुख गश्त बिंदुओं को छीनकर एलएसी के भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास किया। चीन ने दावा किया कि झड़प में उसके चार सैनिक खो गए, हालांकि भारत ने दावा किया कि चीन के कम से कम 43 सैनिक मारे गए हैं। भारत के मुताबिक इस हिंसा के पीछे चीन का मकसद एलएसी पर यथास्थिति को एकतरफा बदलना था। 17 जून को पीएम मोदी ने भारत-चीन सीमा तनाव पर राष्ट्र को संबोधित किया और कहा, भारत शांति चाहता है लेकिन उकसाने पर भारत करारा जवाब देगा। 16 जून को भारतीय और चीनी सेनाओं के कोर कमांडरों के बीच एक बैठक अलगाव को लेकर आपसी सहमति के साथ खत्म हुई। हालांकि, कोई योजना नहीं बनाई गई और बाद की बैठकों और राजनयिक वार्ताओं के परिणामस्वरूप गतिरोध पैदा हो गया। इसके बाद, दोनों पक्षों ने उच्च स्तरीय वार्ता की और गतिरोध अभी भी जारी है, लेकिन गलवान जैसी घटनाओं को काफी हद तक टाला गया है। भारत ने इस हिंसक झड़प में अपने कर्नल बिकुमलिया संतोष बाबू को खो दिया था, जो बिहार रेजिमेंट से थे। उन्हें मरणोपरांत महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। मॉस्को में जयशंकर और उस समय के चीनी समकक्ष वांग यी जो अभी भी उनके विदेश मंत्री हैं, सीमा तनाव को कम करने के लिए सहमत हुए।

मोदी सरकार का लक्ष्य तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का: शिवराज

-पीएम फसल बीमा योजना से किसानों को आर्थिक सुरक्षा मिली

नई दिल्ली। (एजेंसी)

लोकसभा चुनाव में मप्र के विदिशा से बड़ी जीत हासिल कर मोदी सरकार में केंद्रीय कृषि मंत्री बने शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि पीएम मोदी का एक और संकल्प है, लखपति दीदी। हमारा लक्ष्य तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का है, इसका एक आयाम कृषि सखी है। इसके लिए महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया है ताकि वे किसानों की खेती में मदद कर सकें।

केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि एक और महत्वपूर्ण योजना पीएम फसल बीमा योजना है। इस योजना से चार करोड़ से ज्यादा किसानों को आर्थिक सुरक्षा मिली है। वैश्विक कीमतों में बढ़ोतरी के बावजूद किसानों को सस्ती दरों पर खाद मिल रही है। उन्होंने इससे पहले वरिष्ठ अधिकारियों के साथ 100 दिवसीय कार्ययोजना पर चर्चा की। इसका उद्देश्य कृषि क्षेत्र को मजबूत करना और किसानों के संकट को कम करना है। बैठक में कृषि राज्यमंत्री रामनाथ ठाकुर और भागीरथ चौधरी, कृषि सचिव मनोज आहूजा और अन्य शीर्ष अधिकारी शामिल हुए। बैठक में चौहान ने देशभर में कृषि उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए किसानों तक गुणवत्तापूर्ण आदानों की आपूर्ति सुनिश्चित करने की जरूरत पर बल दिया। एक सरकारी बयान में कहा गया है कि कार्ययोजना का उद्देश्य न केवल कृषि उत्पादों में आत्मनिर्भरता हासिल करना है, बल्कि इस क्षेत्र से निर्यात की गुणवत्ता को भी बढ़ाना है। केंद्र की 100-दिन की कार्ययोजना को कृषक समुदाय के भविष्य को पुनर्जीवित करने के लिए एक बहुत जरूरी उपाय के रूप में देखा जा रहा है। इस कार्ययोजना को विभिन्न राज्यों और फसल चक्रों में कार्यान्वयन के लिए विशिष्ट लक्ष्यों और समयसीमा के साथ लागू किए जाने की उम्मीद है।

आम आदमी पार्टी नैतिकता विहीन, देश की जनता ने पूरी तरह नकारा

-दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष ने कहा- आप नेताओं का कोई नैतिक मूल्य नहीं

नई दिल्ली। (एजेंसी)

आम आदमी पार्टी एक नैतिकता विहीन पार्टी है जिसके नेता संदीप पाठक और संजय सिंह से लेकर गोपाल राय और सुश्री आतिशी तक कोई नैतिक मूल्य नहीं रखते। दिल्ली, हरियाणा, गुजरात, गोवा और पंजाब इन सभी राज्यों में हाल ही हुए लोकसभा चुनावों में देश के मतदाताओं ने उन्हें पूरी तरह से खारिज कर दिया है। यह बात दिल्ली बीजेपी अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कही।

सचदेवा ने कहा है कि आप नेताओं को समझना चाहिए कि दिल्ली और पंजाब के लोग, जहां उनकी पूर्ण सरकारें हैं, लोकसभा चुनावों में आप को खारिज कर चुके हैं क्योंकि वे उनकी भ्रष्टाचार कथाओं से तंग आ चुके हैं। उन्होंने कहा कि आप को पूरी तरह से खारिज करने के बाद देशवासियों ने उम्मीद की थी कि आप नेता विकास कार्यों पर ध्यान देंगे, लेकिन यह चौंकाने वाला है कि वे आज भी पीएम नरेंद्र मोदी की आलोचना की पुरानी गंदी राजनीति

करने में लगे हैं, पीएम मोदी आज न केवल भारत में बल्कि दुनिया में सबसे बड़े राजनेता हैं, लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि आप नेता खुद को लोकतंत्र के लिए शहीद दिखाने की कोशिश कर रहे हैं।

हरियाणा में 5 सीटों पर जीत से प्रदेश कांग्रेस मजबूत, अब टिकट बंटवारे को लेकर घमासान छिड़ा

चंडीगढ़। (एजेंसी)

हरियाणा में 5 सीटों पर जीत से इस बार प्रदेश कांग्रेस मजबूत हुई वहीं चुनाव परिणाम के बाद टिकट बंटवारे को लेकर घमासान छिड़ गया है। चुनाव में जीतने वाले 4 सांसद भूपेंद्र सिंह हुड्डा के नेतृत्व में एकजुटता दिखा रहे हैं लेकिन कुमारी सैलजा सबसे अलग चल रही हैं। वह आए दिन नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा के फैसलों पर सवालिया निशान लगा रही हैं। हालांकि एसआरके गुट में रणदीप सुरजेवाला और किरण चौधरी ने चुप्पी साध रखी है।

वहीं सिरसा से सांसद बनने के बाद सैलजा ने हरियाणा में जिलास्तर पर अपने समर्थकों को लामबंद करना शुरू कर दिया है। उनके समर्थकों के साथ बैठकों के दौरान सैलजा लगातार लोकसभा चुनाव में टिकट आवंटन को लेकर बयान दिए जा रहे हैं। सैलजा ने अंबाला में वरुण मुलाना को उनकी सिफारिश पर टिकट दिए जाने का बयान देकर सभी को चौंका दिया है। फिर उन्होंने गुड़गांव और भिवानी-महेंद्रगढ़ में टिकट बंटवाने को लेकर सवाल भी खड़े किए हैं। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि और बेहतर तरीके से टिकट वितरण कर सकते थे। सैलजा ने अपनी ही पार्टी से पूछा कि कैंडिडेट इम्पोर्ट करने की जरूरत क्यों पड़ी। उन्होंने माना कांग्रेस में गुटबाजी है। उन्होंने नसीहत देते हुए कहा कि ऐसे ही तेरा मेरा करते रहे तो मुश्किल हो जाएगी। आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर सैलजा ने कहा कि प्रभारी को निष्पक्ष होना होगा। मैरिट के आधार पर टिकटें दी जाएं। सीएम पद को लेकर सैलजा ने कहा कि इसका फैसला हाईकमान करेगा। वहीं इस पूरे घटनाक्रम पर जहां भूपेंद्र सिंह हुड्डा चुप हैं।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष उदयभान ने भी सैलजा के खिलाफ मोर्चा खोलते हुए कहा है कि वह पार्टी में वरिष्ठ हैं। उन्हें जो भी बात कहनी है वह पार्टी के प्लैटफॉर्म पर आकर कहें। कांग्रेस अध्यक्ष ने शुक्रवार को जारी एक बयान में कहा कि टिकट वितरण बेहतर हुआ था तभी हरियाणा में कांग्रेस को 5 सीटों पर जीत मिली व हरियाणा में कांग्रेस का ग्राफ भी बढ़ा है। कुमारी सैलजा को इस तरह से जनता में या फिर मीडिया में बयान नहीं देना चाहिए। कांग्रेस इस चुनाव के बाद मजबूत होकर उभरी है और प्रदेश के विधानसभा चुनाव में 70 से अधिक सीटों पर जीतकर कांग्रेस सरकार बनाएगी।

संसद में एक साथ दिखेंगे पति और पत्नी

सपा के अखिलेश और उनकी पत्नी डिंपल यूपी से एक साथ संसद पहुंचने वाले पहले दंपती होंगे

नई दिल्ली। (एजेंसी)

लोकसभा चुनाव में नए कीर्तिमान बनाने वाली समाजवादी पार्टी के हाथ एक अनूठी उपलब्धि लगी है। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव और उनकी पत्नी डिंपल यादव मौजूदा लोकसभा में यूपी से एक साथ सांसद पहुंचने वाले पहले दंपती होंगे। इस बार लोकसभा चुनाव में अखिलेश यादव कन्नौज व डिंपल यादव मैनपुरी से सांसद निर्वाचित हुई हैं। अखिलेश यादव के विधानसभा इस्तीफे के बाद देश की संसदीय राजनीति में नया इतिहास जुड़ गया है। 2024 में सदन में पति-पत्नी की इकलौती जोड़ी के रूप में डिंपल और अखिलेश संसद में नजर आएंगे। हालांकि इससे पहले भी संसद में पति-पत्नी की जोड़ी पहुंची है।

इस बार के चुनाव में ये कारनामा सैफई परिवार ने किया है। लोकसभा के आगामी सत्र में सांसदों की शपथ के साथ ही अखिलेश और डिंपल के नाम ये रिकार्ड दर्ज हो जाएगा। उत्तर प्रदेश से एक साथ लोकसभा पहुंचने वाले दंपती के परिवार के 3 अन्य सदस्य भी सांसद निर्वाचित हुए हैं।

2019 के चुनाव में अखिलेश यादव आजमगढ़ से लोकसभा सदस्य बनने में कामयाब हुए थे लेकिन डिंपल यादव को कन्नौज में पराजय झेलनी पड़ी थी। इस बार मैनपुरी संसदीय क्षेत्र से बड़ी जीत हासिल कर वह संसद पहुंची डिंपल यादव और अखिलेश की जोड़ी सदन की कार्रवाई के दौरान चर्चा का केंद्र रहेगी। वहीं संसदीय इतिहास में इससे पहले भी पति-पत्नी सदन में रहे हैं। बिहार के सांसद पप्पू यादव और उनकी पत्नी 2004 और 2014 में एक साथ निर्वाचित होकर लोकसभा पहुंचे थे। इस बार भी पप्पू यादव लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए हैं जबकि उनकी पत्नी कांग्रेस की राज्यसभा सांसद हैं। अभिनेता धर्मेंद्र और हेमा मालिनी भी एक ही कार्यकाल में अलग-अलग सदनों के सदस्य रह चुके हैं।

रुद्रप्रयाग में भीषण हादसे में 9 लोगों की मौत

-यात्रियों को ले जा रहा टेंपो ट्रैवलर अलकनंदा नदी में गिरा

रुद्रप्रयाग। (एजेंसी)

उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग स्थित अलकनंदा नदी में एक ऑपो ट्रैवलर के गिरने से भीषण हादसा हो गया। करीब 16-17 यात्रियों को ले जा रहा टेंपो ट्रैवलर बद्रीनाथ हाइवे पर गहरी खाई में गिर गया, जिससे 9 लोगों की मौत हो गई।

जानकारी अनुसार घटना की जानकारी मिलने के बाद ही एसडीआरएफ की टीम घटना स्थल पहुंच गई है। पुलिस और प्रशासन की टीमें भी घटना स्थल में पहुंचकर राहत व बचाव कार्य में लग गईं। घटना के संबंध में एसडीआरएफ ने जानकारी देते हुए बताया है कि घटना स्थल से दो घायलों को बाहर निकाल लिया गया है। वहीं बचाव दल का कहना था कि रुद्रप्रयाग में बद्रीनाथ हाईवे के पास एक टेम्पो ट्रैवलर गहरी खाई में गिरा है। सूचना मिलने के फौरन बाद घटना स्थल पहुंची एसडीआरएफ और पुलिस की टीमों ने बचाव कार्य शुरु कर दिया है। दो घायलों को टीम ने रेस्क्यू कर एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचा दिया है।

एक अन्य जानकारी में बताया गया कि रुद्रप्रयाग में बद्रीनाथ हाइवे पर हुए एक्सिडेंट में वाहन अलकनंदा नदी में गिरा हुआ मिला

है। अलकनंदा नदी के किनारे मिले क्षतिग्रस्त वाहन को देखकर ही समझा जा सकता है कि दुर्घटना कितनी भयावह रही होगी। कुछ लोगों का कहना है कि इस हादसे में कुछ स्थानीय लोगों के भी घायल होने का अंदेशा है। इस मामले में प्रशासनिक पुष्टि किए जाने का इंतजार किया जा रहा है।

वहीं स्थानीय लोगों ने बताया कि दुर्घटना भयावह थी। हाइवे से लहराती हुई आई टेंपो ट्रैवलर गाड़ी अचानक गहरी खाई से होते हुए नदी किनारे तक पहुंच गई। इस हादसे में अब तक 9 लोगों की मौत होने की बात सामने आई है। वहीं, कुछ अन्य की हालत गंभीर बनी हुई है। दुर्घटना के बाद 12 लोगों को रेस्क्यू कर लिया गया है। एक अन्य दावे में कहा गया है कि टेंपो ट्रैवलर में 26 यात्री सवार थे, जबकि पहले मिली जानकारी अनुसार इसमें महज 17 यात्रियों के होने की बात कही गई थी। घायलों को इलाज के लिए नजदीकी चिकित्सालय में भेजा गया है।

कांग्रेस ने 99 सीटें क्या जीतीं आतंकवादी फिर सक्रिय हो गए

-बीजेपी के आईटी सेल के प्रमुख ने कांग्रेस पर लगाए आरोप

नई दिल्ली। (एजेंसी)

लोकसभा चुनाव में बीजेपी के बाद कांग्रेस ही सबसे ज्यादा सीटें हासिल कर सकी है। बीजेपी ने 240 तो कांग्रेस ने 99 सीटों पर जीत हासिल की है। अब कांग्रेस पर बीजेपी ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस ने 99 सीटें क्या जीतीं देश में आतंकवादी समूह फिर सक्रिय हो गए हैं। बीजेपी के आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने शनिवार को एक्स पर एक पोस्ट में कहा, कांग्रेस 99 पर क्या पहुंची, आतंकवादी समूह सक्रिय हो गए हैं। एक तरफ विपक्ष फैजाबाद में बीजेपी की हार का जश्न मना रहा है तो दूसरी तरफ जैश-ए-मोहम्मद अयोध्या में राम मंदिर को उड़ाने की धमकी दे रहा है। कांग्रेस की तरह, उन्हें भी जल्द ही एहसास होगा कि 99 पर कोई के वल नैतिक जीत का ही दावा कर सकता है, सरकार बनाने का नहीं। मुंहतोड़ जवाब मिलेगा।

लोकसभा चुनाव में बीजेपी उम्मीदवार के अयोध्या से हारने के बाद और पूरे देश के नतीजे आने के बाद से ही विपक्षी दल बीजेपी की जीत पर सवाल उठा रहे हैं। अयोध्या की हार को बीजेपी के लिए बड़ी हार बताते हुए विपक्षी दल लोकसभा में बीजेपी की सीटों की संख्या कम होने पर भी कटाक्ष कर रहे हैं। उनका दावा है कि यह बीजेपी की नैतिक हार है।

उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ दिनों में जम्मू कश्मीर में आतंकवादी घटनाओं में भी बढ़ोतरी देखी गई है। आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने अयोध्या में राम मंदिर को बम से उड़ाने की धमकी दी है। आतंकी धमकी के मद्देनजर अयोध्या में सुरक्षा-व्यवस्था और मजबूत कर दी गई है।

अमेरिका के एक स्कूल में जुड़वा और तिड़वा बच्चों की भरमार

न्यूयार्क सिटी ।ये दुनिया अप्रत्याशित चीजों से भरी पड़ी है।ऐसा ही एक अनोखा वाक्या फ्लोरिडा के एक स्कूल में भी हुआ, इसने सभी को हैरान कर दिया।हुआ यूं कि महीने की शुरुआत में फ्लोरिडा के एक हाई स्कूल से 10वीं के बच्चे ग्रैजुएट हुए।पर जब स्टेज पर एक के बाद एक जुड़वा भाई बहन दिखे तब लोगों के होश उड़ गए।इस भीड़ में 1 तिड़वा बच्चे भी थे।स्कूल को भी नहीं पता था कि इस बैच में इतने सारे ट्विंस और ट्रिपलेट्स मौजूद हैं।साउथ फ्लोरिडा में कूपर सिटी हाई स्कूल में हाई स्कूल बैच के 543 बच्चों का ग्रैजुएशन डे था।वे अगली कक्षा में प्रमोट हो रहे थे।इस मौके पर पता चला कि बैच में कई जुड़वा और तिड़वा बच्चे भी हैं।इसमें आइडेंटिकल ट्विंस के 2 सेट, यानी एक दूसरे से मिलती-जुलती शक्ल के 2 सेट और बाकी 12 सेट फेटर्नल ट्विंस थे, यानी वे एक साथ पैदा हुए थे पर एक जैसी शक्ल के नहीं थे।स्कूल की प्रिंसिपल ने कहा कि ये उनके लिए काफी स्पेशल पल था क्योंकि उनमें से एक स्टेज पर आकर उनसे हाथ मिलाता, वहां उसे डिप्लोमा सर्टिफिकेट देतीं, और फिर दूसरा भी आ जाता और वहां उस भी उसी प्रकार डिप्लोमा सर्टिफिकेट दे देती थीं।उन्होंने कहा कि ये दर्शाता है कि वहां अलग-अलग व्यक्ति हैं, पर वे इतने सालों तक साथ ही रहे हैं। इस बारे में एक लड़की ने कहा कि ये देखना काफी हैरान करने वाला है कि आपकी तरह इतने लोग मौजूद हैं।अब ये बच्चे आगे की शिक्षा के लिए लिए तैयार हो रहे हैं।मुमकिन है कि इनमें से कई अब अलग-अलग जगह जाकर अपनी अलग जिंदगी बनाएंगे।वहीं दो जुड़वा भाइयों ने कहा कि अलग-अलग रहना काफी मुश्किल होगा, पर वहां वीडियो कॉल के जरिए एक दूसरे से जुड़े रहने वाले है।

अमेरिका की अदालत ने टीसीएस पर भारी जुर्माना लगाया

टेक्सास ।अमेरिका की एक अदालत ने भारत की सबसे बड़ी आईटी कंपनी टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) पर ट्रेड सीक्रेट का दुरुपयोग करने के लिए भारी भरकम जुर्माना लगाया है।टेक्सास के यूनाइटेड स्टेट्स डिस्ट्रिक्ट कोर्ट ने कंप्यूटर साइंसेज कॉरपोरेशन की एक शिकायत के बाद टीसीएस पर 194 मिलियन डॉलर से ज्यादा का ये जुर्माना लगाया है।वहीं कंपनी का मानना है कि इस मामले में उसके पास मजबूत तर्क हैं और वह उचित अदालत में समीक्षा के लिए अपील करेगी।कंपनी पर ये जुर्माना ट्रेड सीक्रेट का दुरुपयोग करने के आरोप के कारण लगाया गया है।कंप्यूटर साइंसेज कॉरपोरेशन ने कंपनी के खिलाफ मुकदमा दायर किया था।अदालत के आदेशों के अनुसार, कंपनी साल 2016 के डिफेंड ट्रेड सीक्रेट्स एक्ट के तहत व्यापार रहस्यों के दुरुपयोग के लिए जिम्मेदार है।जिला न्यायालय ने कहा कि आईटी कंपनी कुल 194.2 मिलियन के लिए जिम्मेदार है, जिसमें 56,151,583 कम्पनसेटरी डैमेज और 112,303,166 एक्जेम्पलरी डैमेज के रूप में शामिल हैं।वहीं टीसीएस ने स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में कहा, 卐अदालत ने यह भी आंका कि कंपनी 13 जून, 2024 तक 25,773,576.60 प्री-जजमेंट ब्याज के लिए जिम्मेदार है। भारतीय मुद्रा में जुर्माने की रकम तकरीबन 1,622 करोड़ रुपये है।

अमेरिका में भारतीय महिलाओं पर गोलीबारी, एक की मौत दूसरी घायल, आरोपी युवक पकड़ा गया

न्यूजर्सी ।अमेरिका में भारतीय पर हमले का एक और मामला सामने आया है। यह घटना न्यूजर्सी की है।यहां रह रही पंजाब के जालंधर की दो बहनों पर गोलियां चलायी गयी हैं।इस गोलबारी में 29 साल की एक लड़की जसवीर कौर की मौत हो गयी जबकि दूसरी गंभीर है।पुलिस ने मामले के मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।हमला करने वाले का नाम गौरव गिल है और वह भी जालंधर का ही है।प्राप्त जानकारी के अनुसार आरोपी कुछ साल पहले जालंधर से पढ़ाई के लिए वीजा लेकर अमेरिका गया था।यहां किसी बात को लेकर विवाद हो गया जिसके बाद गौरव ने जसवीर कौर और उसकी चचेरी बहन पर गोली चला दी।इस हमले में घायल लड़की को अस्पाल में भर्ती कराया गया है।घायल लड़की और गौरव एक दूसरे को पहले से जानते थे, गोली मारने की वजह अभी सामने नहीं आई है।पुलिस ने आरोपी को पहली बार मिडलसेक्स काउंटी कोर्ट में जज के सामने पेश किया।दोनों लड़कियां घटनास्थल से कुछ ही दूरी पर रहती हैं।स्थानीय पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या, हत्या के प्रयास और अवैध हथियार रखने का मामला दर्ज किया है।आरोपी गौरव की गिरफ्तारी का सी.सी.टी.वी. फुटेज सामने आया है, जिसमें दिख रहा है कि आरोपी एक घर में छिपा हुआ है।पहले पुलिस बल ने उन्हें घेर लिया, फिर उसने हाथ उठाया और आत्मसमर्पण कर दिया।मामले की अगली सुनवाई मंगलवार को होगी।

कनाडा में 20 मिलियन डॉलर सोने की चोरी करने वाला चोर करेगा सरेंडर

टोरंटो ।कनाडा में 20 मिलियन डॉलर की सोने की चोरी में शामिल चोर सरेंडर करने की सोच रहा है।एयर कनाडा के पूर्व प्रबंधक ने शुक्रवार को मीडिया को बताया कि वह खुद को सौंपने की तैयारी कर रहा है।सिमरन प्रीत पनेसर पर टोरंटो के पियर्सन हवाई अड्डे से अप्रैल 2023 में हुई चोरी का उस पर आरोप हैं। उनके वकील ग्रेग लाफोंटेन ने बताया कि पनेसर देश से बाहर है लेकिन उन्होंने यह नहीं बताया कि वे कहां हैं।वकील लाफोंटेन ने बताया कि उन्होंने अधिकारियों को कहा है कि पनेसर अगले कुछ हफ्तों में स्वेच्छा से देश लौटने और सरेंडर करने की योजना बना रहा है।वकील ने बताया कि पनेसर को न्याय प्रणाली पर पूरा भरोसा है और जब यह छानबीन खत्म हो जायेगी तो वह कोई भी गलत काम नहीं करेगा।पुलिस ने कहा कि अप्रैल में उन्होंने 6 लोगों को गिरफ्तार किया था व 3 और लोगों की तलाश कर रहे थे।पुलिस अधिकारियों ने कहा कि एयर कनाडा के 2 कर्मचारियों सहित संदिग्धों पर स्विट्जरलैंड से आने वाले 6 हजार 600 सोने की छड़ें जिनका वजन करीब 400 किलो था को चुराने का उस पर आरोप है।इसके लिए उन्होंने एयरवे बिल में जालसाजी भी की थी।कनाडा पुलिस के मुताबिक यह चोरी 17 अप्रैल 2024 को हुई थी।चोरों ने 6 हजार 600 शुद्ध गोल्?ड बार से भरे 400 किलो के कंटेनर को जिसमें 25 लाख कनाडाई डॉलर भी थे स्?टोरेज फैसिलिटी से चुरा लिया।यह कंटेनर स्विटजरलैंड के ज्?यूरिख एयरपोर्ट से टोरंटो एयरपोर्ट पर लाया गया था।कड़ी सुरक्षा के बीच कंटेनर को कार्गो से उतारकर रख दिया गया।दूसरे दिन पुलिस को पता चला कि सोना और कैश दोनों गायब हैं।

नेपाल के लुंबिनी में भारत ने रखी स्कूल की नींव

काठमांडू।नेपाल के लुंबिनी प्रोविंस के प्यूथान जिले में एक स्कूल और हॉस्टल की नींव भारत ने शुक्रवार को रख दी है।यह नींव भारत और नेपाल के बीच एक समझौते के तहत एक हाई इंपैक्ट कम्युनिटी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट (सामुदायिक विकास परियोजना) के रूप में रखी गई है।प्यूथान जिले के ऐरावती ग्रामीण नगर पालिका-1 में डांग-बैंग माध्यमिक स्कूल के साथ ही एक हॉस्टल का निर्माण नेपाल-भारत विकास सहयोग के तहत किया जा रहा है।भारत सरकार इसके लिए 33.92 मिलियन नेपाली रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली इस सहायता से स्कूल और उसके लिए एक हॉस्टल बिल्डिंग के साथ ही अन्य सुविधाओं के मुहैया कराने के लिए किया जा रहा है।भारतीय दूतावास ने इसकी जानकारी आधिकारिक विज्ञप्ति जारी कर दी है।इसके मुताबिक, साल 2003 से भारत सरकार ने नेपाल में विभिन्न क्षेत्रों में 551 से अधिक हाई इंपैक्ट कम्युनिटी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट शुरू किए हुए हैं और 490 परियोजनाओं का कार्य पूर्ण किया है।इनमें से विभिन्न क्षेत्रों वाली 61 परियोजनाएं लुंबिनी प्रांत में हैं, जिनमें प्यूथान में चल रहीं 2 परियोजनाएं भी शामिल हैं।इनके अतिरिक्त भारत सरकार ने नेपाल के विभिन्न अस्पतालों, स्वास्थ्य चौकियों और शैक्षणिक संस्थानों को 1009 एम्बुलेंस और 300 स्कूल बसें बतौर उपहार भेंट में दी हैं।

वेटिकन में एक सांस्कृतिक समारोह में पोप फ्रांसिस से मिले कमेडियन वहोपी गोल्डबर्ग।

जी 7 को लेकर पीएम मोदी ने बताया कैसी रही ब्राजील, यूएई समेत अन्य देशों के प्रमुखों से मुलाकात

अपुलिया ।इटली में जी 7 शिखर सम्मेलन का आयोजन खूब जोर-शोर से हुआ।इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति, ब्राजील और जॉर्डन के नेता समेत कई नेताओं ने शिरकत की थी।समारोह के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन, संयुक्त अरब अमीरात के राष्ट्रपति मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान और ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला दा सिल्वा सहित कई नेताओं के साथ बहुत सारी बातें की और फोटो भी खिचवाईं। पीएम मोदी ने कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो और अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन और जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा के साथ भी मुलाकात की।उन्होंने फुमियो किशिदा के साथ मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल प्रोजेक्ट पर बहुत देर तक चर्चा की।यह जी 7 शिखर सम्मेलन में भारत की 11वीं और पीएम मोदी की लगातार पांचवीं भागीदारी थी।पीएम नरेंद्र मोदी ने एक्स पर इटली की फोटो शेयर की है।उन्होंने लिखा, इटली में बातचीत जारी है... राष्ट्रपति, महामहिम शेख के साथ बहुत अच्छी बातचीत हुई।जानकारी के लिए बता दें कि इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने पीएम मोदी को इटली के अपुलिया क्षेत्र में जी7 शिखर सम्मेलन में पार्ट लेने के लिए आमंत्रित किया था। साथ ही जियोर्जिया मेलोनी ने जी 7 के 50वें शिखर सम्मेलन में ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ऋषि सुनक, अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन, फ्रांसीसी राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन और कनाडाई प्रधान मंत्री जस्टिन ट्रूडो सहित अन्य वैश्विक नेताओं का भी स्वागत किया।

जी7 शिखर सम्मेलन में भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारे को लेकर प्रतिबद्धता व्यक्त की गई

बारी (इटली) (एजेंसी)। जी7 शिखर सम्मेलन के अंत में जारी विज्ञप्ति में सात औद्योगिक देशों के समूह ने भारत-पश्चिम-यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) जैसे ठोस बुनियादी ढांचे के प्रस्तावों को आगे बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्धता जताई। यह विज्ञप्ति शुक्रवार शाम को लक्जरी रिसॉर्ट बोर्गो एग्नाजिया में प्रथा के तौर पर ''पारिवारिक फोटो'' के बाद जारी की गई। इसके साथ जी7 ने कानून के शासन के आधार पर ''स्वतंत्र और मुक्त हिंद-प्रशांत'' के प्रति प्रतिबद्धता भी दोहराई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मेजबान इतालवी समकक्ष जॉर्जिया मेलोनी के निमंत्रण पर जी7 शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

विज्ञप्ति में कहा गया, ''हम गुणवत्तापूर्ण अवसंरचना और निवेश की खातिर परिवर्तनकारी आर्थिक गलियारे विकसित करने के लिए जी7 पीजीआईआई (वैश्विक अवसंरचना और निवेश के लिए साझेदारी) के ठोस प्रस्ताव, प्रमुख परियोजनाओं और पूरक प्रस्तावों को बढ़ावा देंगे, जैसे कि लोबिटो कॉरिडोर, लुजोन कॉरिडोर, मिडिल कॉरिडोर और भारत-पश्चिम एथिया-यूरोप आर्थिक कॉरिडोर के लिए हमारे समन्वय तथा वित्तपोषण कार्यक्रम को मजबूत करना, इसके साथ ही ईयू ग्लोबल गेटवे, ग्रेट ग्रीन वॉल पहल और अफ्रीका के लिए इटली द्वारा शुरू की गई मैटेई योजना को तैयार करना।''

भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारा (आईएमईसी) परियोजना के तहत सऊदी अरब, भारत, अमेरिका और यूरोप के बीच एक विशाल सड़क, रेलमार्ग और पोत परिवहन तंत्र की परिकल्पना की गई है ताकि एशिया, पश्चिम एशिया और पश्चिम के बीच जुड़ाव सुनिश्चित किया जा सके। आईएमईसी को

समान विचारधारा वाले देशों द्वारा चीन की 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव' (बीआरआई) के समक्ष रणनीतिक प्रभाव हासिल करने की पहल के रूप में भी देखा जा रहा है। बीआरआई एक विशाल संपर्क परियोजना है जो चीन को दक्षिण-पूर्व एशिया, मध्य एशिया, रूस और यूरोप से जोड़ती है। पिछले वर्ष दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान आईएमईसी को अंतिम रूप दिया गया था।

शुक्रवार को मोदी के संबोधन वाले कृत्रिम मेधा, ऊर्जा, अफ्रीका और भूमध्य सागर विषय पर आयोजित 'आउटरीच सोशन' के बारे में विज्ञप्ति में कहा गया, ''साझा जिम्मेदारी की भावना से हम अल्जीरिया, अर्जेंटीना, ब्राजील, भारत, जॉर्डन, केन्या, मॉरिटानिया, ट्यूनीशिया, तुर्किये और संयुक्त अरब अमीरात के नेताओं की भागीदारी का गर्मजोशी से स्वागत करते हैं।'' इसमें कहा गया, ''हम अधिक निश्चितता, पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए अपने कृत्रिम मेधा प्रचालन से जुड़े दृष्टिकोणों के बीच तालमेल को बढ़ाने के अपने प्रयासों को आगे बढ़ाएंगे। इस दौरान हम यह भी ध्यान में रखेंगे कि जी7 सदस्यों के रुख और नीतिगत व्यवस्थाएं भिन्न हो सकती हैं।'' शिखर सम्मेलन के एजेंडे की अन्य प्राथमिकताओं के अलावा, विज्ञप्ति में रूस के साथ जारी संघर्ष में यूक्रेन के लिए ''मजबूत समर्थन'' व्यक्त किया गया।

बाइडेन ने दिलचस्प अंदाज में ट्रंप को कहा हैप्पी बर्थडे

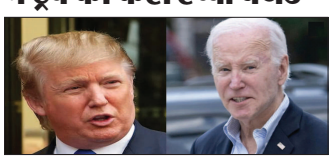

वाशिंगटन । अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आज अपना 78वां जन्मदिन मनाया है। इस मौके पर राष्ट्रपति जो बाइडेन ने उन्हें अपने ही अंदाज में जन्मदिन की बधाई दी, जिसे लेकर अब चर्चा हाम हो गई है। दरअसल उन्होंने इसे अपने चुनावी अभियान से जोड़ते हुए ट्रंप की उम्र के मुताबिक 78 उपलब्धियां गिना दीं हैं। अब चूंकि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प 78 वर्ष के हो गए हैं अत-राष्ट्रपति बाइडेन ने भी ट्रम्प की 78 उपलब्धियों को गिनाते हुए जन्म दिन की बधाई दे डाली। अमेरिकी राष्ट्रपति ने ट्रम्प के कार्यों के साथ अपने कार्यों की तुलना करते हुए एक वीडियो शेयर किया है। इस तरह से बाइडेन ने ट्रम्प को जन्मदिन संदेश जारी कर चुनाव प्रचार का काम भी कर लिया। इसमें उन्होंने बताया है कि किस तरह से पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप एक असफल और धोखेबाज़ इंसान हैं।

यहां बतलाते चलें कि अमेरिका में इसी साल राष्ट्रपति चुनाव होने हैं और राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव मैदान में उतरे दोनों ही प्रमुख-पार्टी के उम्मीदवार यानी ट्रम्प और राष्ट्रपति जो बाइडेन खासे उम्रदार हैं। इनमें से बाइडेन जहां 81 साल के हैं, वहीं ट्रम्प 78 साल के हो चुके हैं। इस चुनाव के मद्देनजर बाइडेन कैंप की तरफ से एक वीडियो जारी किया गया, जिसमें लिखा गया, जन्मदिन मुबारक हो, डोनाल्ड। आप एक बदमाश, एक असफल, एक धोखेबाज और हमारे लोकतंत्र, अर्थव्यवस्था, अधिकारों और भविष्य के लिए खतरा हैं। इसके आगे बाइडेन दिलचस्प अंदाज में कहते हैं, कि अमेरिका की ओर से, आपके 79वें जन्मदिन के लिए हमारा तोहफा पहले से ही यह सुनिश्चित करना होगा कि आप फिर कभी राष्ट्रपति न बनें। इसके साथ ही बाइडेन एडमिनिस्ट्रेशन ने ट्रम्प की 78 कथित उपलब्धियों की एक लिस्ट भी जारी की है। इस लिस्ट में पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप पर लगे विभिन्न आरोपों और दोषी ठहराए जाने वाले मामलों का उल्लेख करते हुए लिखा गया कि यह पहले राष्ट्रपति हैं।

अंतरिक्ष तक पहुंच सकती है रुस और युक्रेन के बीच चल रही जंग

मॉस्को (एजेंसी)। यूक्रेन के साथ दो साल से ज्यादा समय से रूस युद्ध में उलझा हुआ है। इस दौरान रूस ने अपने एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम पर ही ज्यादातर समय भरोसा जताया लेकिन हाल के समय में यूक्रेनी मिसाइलों के खिलाफ एस-400 के फेल होने की रिपोर्ट सामने आई हैं। ऐसे में रूस ने रणनीतिक तौर पर बेहद अहम केर्च ब्रिज को यूक्रेनी हमलों से बचाने के लिए रणनीति बदली है। ये पुल रूस को क्रीमिया से जोड़ता है। रूस इसका इस्तेमाल क्रीमिया में सैनिकों और हथियारों के परिवहन के लिए उपयोग करता है। इस पुल को बचाने के लिए रूस ने अपनी सबसे नई और सक्षम एस-500 वायु रक्षा प्रणाली को तैनात किया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यूक्रेनी रक्षा खुफिया (एचयूआर) प्रमुख किरिलो बुडानोव ने बताया है कि रूस ने केर्च ब्रिज की रक्षा के लिए अपने सबसे परिष्कृत एस-500 वायु रक्षा प्रणाली को क्रीमिया में तैनात किया है। किरिलो बुडानोव ने कहा कि हमने एस-500 तत्वों क्रीमिया में देखा है। एस-500 की तैनाती की रिपोर्ट पूर्व रूसी रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगू की ओर से अप्रैल में की गई उस घोषणा के बाद आई है, जिसमें उन्होंने कहा था कि रूसी सशस्त्र बलों को इस साल अगली पीढ़ी के बहुप्रतीक्षित एस-500 वायु रक्षा प्रणाली का पहला बैच प्राप्त होगा। बुडानोव के दावे पर सैन्य विश्लेषकों ने कहा है कि रूस अपने रणनीतिक महत्व को देखते हुए यूक्रेनी हमलों के खिलाफ केर्च ब्रिज को सुरक्षित कर रहा है। इस पुल को कई बार यूक्रेनी सेना निशाना बना चुकी है। अगस्त 2023 में भी ये पुल बमबारी में क्षतिग्रस्त हो गया था। सैन्य विश्लेषक विजिंदर के ठाकुर का इस पर कहना है कि एस-500 प्रणाली की अतिरिक्त रेंज यूएस/नाटो संपत्तियों को करीब 100 किमी दूर संचालित करने के लिए मजबूर करेगी, जिससे उनकी आईएसआर क्षमता कम हो जाएगी। ये तैनाती ऐसे समय में हुई है जब यूक्रेन ने रूस पर हमला करने के लिए अपने लंबी दूरी के हथियारों का उपयोग करना शुरू कर दिया है, खासकर क्रीमिया को तीव्र जोखिम में डाल दिया है। एस-500 गेम-चेंजर साबित होने का वादा करता है। यह कथित तौर पर पांचवीं पीढ़ी के विमानों, कम कक्षा के उपग्रहों और मिसाइल खतरों का मुकाबला करने में सक्षम है। इसे ए-135 एंटी-बैलिस्टिक मिसाइल सिस्टम के संभावित प्रतिस्थापन के रूप में बनाया गया था, जो अब मॉस्को के बाहर साइलो में तैनात है। इसके अतिरिक्त, इसका उद्देश्य लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (एसएएम) प्रणाली, एस-400 ट्रायम्फ का समर्थन करना है। एस-500 एक परिष्कृत रडार कॉम्प्लेक्स से सुसज्जित है जिसमें प्रति बैटरी चार रडार वाहन शामिल हैं।

दक्षिण अफ्रीका के दोबारा राष्ट्रपति चुने गए रामफोसा, 19 को लेंगे शपथ

केपटाउन (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका की सत्तारूढ़ पार्टी एएनसी के नेता सिरिल रामफोसा को संसद ने एक बार फिर राष्ट्रपति चुन लिया है। नेशनल असेंबली की बैठक की अध्यक्षता करने वाले मुख्य न्यायाधीश रेमंड ज़ोंडो ने ऐलान किया कि राष्ट्रपति चुनाव में रामफोसा को 283 वोट मिले, जबकि इकोनॉमिक फ्रीडम फाइटर्स के उम्मीदवार जूलियस मालेमा को 44 वोट हासिल मिले हैं।

मीडिया रिपोर्टस के मुताबिक दोबारा राष्ट्रपति चुने जाने के बाद रामफोसा ने अपने पहले संबोधन में कहा कि उन्होंने दोबारा राष्ट्रपति बनने को एक बड़ी जिम्मेदारी के रूप में माना है। वह उन लोगों के साथ भी काम करेंगे जिन्होंने उनका समर्थन नहीं किया। उन्होंने कहा कि मई के अंत में हुए आम चुनावों के परिणामों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि देश के लोग अपने नेताओं से मिलकर काम करने की उम्मीद करते हैं।

रामफोसा ने आगे कहा कि अपने वोटों के जरिए लोग उम्मीद करते हैं कि गैर-नस्लवाद, गैर-लिंगवाद पर आधारित शांति और न्याय पर आधारित लोकतांत्रिक समाज के उद्देश्यों को प्राप्त करने, स्थिरता सुनिश्चित करने और गरीबी, बेरोजगारी और

असमानता की तिहरी चुनौतियों से निपटने, सबके लिए समृद्धि हासिल करने के लिए सभी दल संविधान के ढांचे के अंदर रहकर एक साथ मिलकर काम करेंगे।

रामफोसा ने जोर देकर कहा कि कई दलों की सहमति से बनी राष्ट्रीय एकता की सरकार दो या तीन दलों का एक बड़ा गठबंधन नहीं है। उन्होंने कहा कि लोगों द्वारा दिए जनादेश से यह तय के लिए मिलकर काम कर सकें कि हम उन चुनौतियों का समाधान करें जिनका वे सामना कर रहे हैं और मैं दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति के रूप में इसे हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध हूं।

यह हमारे देश के लिए एक ऐतिहासिक मोड़ है, जिसके लिए हमें अपने संवैधानिक लोकतंत्र और कानून के राज को मजबूत करने और लोगों के लिए एक मिलकर काम करना चाहिए।

दक्षिण अफ्रीकी संविधान के मुताबिक चुने गए राष्ट्रपति को पांच दिन के अंदर अपना पदभार ग्रहण करना है। नेशनल असेंबली द्वारा जारी एक बयान के मुताबिक रामफोसा 19 जून को देश शपथ लेंगे। वहीं सांसदों ने एएनसी के थोको डिडिजा को स्पीकर चुना है जो पहले कृषि मंत्री रह चुके हैं। डेमोक्रेटिक अलायंस (डीए) की एनेली लोट्रिएट डिप्टी स्पीकर चुनी गईं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एएनसी और मुख्य विपक्षी दल डीए ने शुक्रवार को राष्ट्रीय एकता की सरकार बनाने के लिए एक समझौता किया, जिसमें पैट्रिऑटिक अलायंस और इंकाथा फ्रीडम पार्टी भी शामिल होगी। समझौते के तहत रामफोसा को डीए के समर्थन से फिर से राष्ट्रपति चुने जाने की पहले से उम्मीद थी। बता दें गत 29 मई को हुए आम चुनावों में एएनसी ने 400 सीटों में से 159 सीटें हासिल कीं। पिछले 30 साल में पहली बार संसद के निचले सदन में उसे पूर्ण बहुमत नहीं मिला है।

रूस फौरी तौर पर युद्ध रोकने को तैयार, लेकिन यूक्रेन को शर्त मंजूर नहीं

मास्को ।रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध से आम नागरिक भी परेशान हो चले हैं, ऐसे में रुस की तरफ से सशर्त युद्ध बंद करने का वादा किया गया है।दूसरी तरफ यूक्रेन ने रुस की शर्तों को मानने से इंकार कर दिया है, जिससे समझा जा रहा है कि यह युद्ध अभी आगे भी चलता ही रहने वाला है।यहां बताते चलें कि वैश्विक मंचों पर रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने करीब ढाई साल से चल रहे युक्रेन युद्ध को तत्काल प्रभाव से बंद करने और युद्ध विराम का ऐलान करने का वादा किया है।ऐस करने के लिए रुस ने यूक्रेन के सामने दो शर्तें रखीं हैं।इस मामले में शुक्रवार को पुतिन ने अपने एक बयान में कहा कि यदि कीव चार कब्जे वाले यूक्रेनी क्षेत्रों से अपने सैनिकों को वापस बुला ले और उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) में शामिल होने की योजना छोड़ दे तो वह यूक्रेन में तत्काल 'युद्ध विराम' का वादा करता है और यूक्रेन संग वार्ता शुरू करने को राजी होता है।रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने यह बात मॉस्को में विदेश मंत्रालय की एक बैठक को संबोधित करते हुए कहीं।

क्या पीएम मोदी के न्योते पर भारत आएंगे पोप फ्रांसिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पोप फ्रांसिस को भारत आने का न्योता दिया है। पीएम मोदी से पहले पोप से पंडित जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी, इन्द्र कुमार गुजराल और अटल बिहारी वाजपेयी मिल चुके हैं। पीएम मोदी जब साल 2021 में जी20 समिट के लिए रोम के दौरे पर गए थे, तब भी उन्होंने पोप फ्रांसिस से मुलाकात की थी और उन्हें भारत आने का न्योता दिया था। साल 2016 में भी पोप फ्रांसिस भारत आने वाले थे, मगर ऐसा नहीं हो पाया था। पोप फ्रांसिस की बात करें तो अब तक वह भारत के दौरे पर नहीं आए हैं। भारत का दौरा करने वाले अंतिम पोप जॉन पॉल द्वितीय थे, जो एशिया में चर्च पर एक पोप दस्तावेज जारी करने के लिए 1999 में नई दिल्ली आए थे। पीएम मोदी जी 7 समिट में पोप फ्रांसिस से मिले। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पोप फ्रांसिस को भारत आने का न्योता दिया है। उम्मीद की जा रही है कि इस बार पोप फ्रांसिस भारत दौरे पर आएंगे। पीएम मोदी 87 वर्षीय पोप फ्रांसि के साथ गले मिले और हल्के-फुल्के अंदाज में बातचीत करते नजर आए। पोप फ्रांसिस को पीएम मोदी ने साल 2016 और 2021 में भी भारत आने का न्योता दिया था। मगर वह नहीं आए। इस बार भी पीएम मोदी ने इटली में जी7 शिखर सम्मेलन के इतर वेटिकन के चीफ पोप फ्रांसिस को भारत आने का न्योता दिया। अब देखने वाली बात है कि पोप फ्रांसिस आते हैं या नहीं, या फिर आते हैं तो कब। अगर वह आते हैं तो हिंदू बहुल राष्ट्र में उनकी यह पहली यात्रा होगी। दरअसल, पीएम मोदी और पोप फ्रांसिस ने इटली के अपुलिया में जी7 शिखर सम्मेलन के 'आउटरीच सेशन' में गर्मजोशी से मुलाकात की। पीएम मोदी ने कहा कि मैं लोगों की सेवा करने और हमारे ग्रह को बेहतर बनाने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता की सराहना करता हूं। साथ ही उन्हें भारत आने का निमंत्रण भी दिया। वहीं, पोप फ्रांसिस ने भी न्योता स्वीकार कर लिया है। उन्होंने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (एआई), ऊर्जा, अफ्रीका और भूमध्य सागर विषय पर 'आउटरीच सेशन' में अपने संबोधन में कहा कि एआई का बेहतर इस्तेमाल करना हममें से प्रत्येक पर निर्भर करता है। बता दें कि पीएम मोदी रोमन कैथोलिक चर्च के प्रमुख पोप फ्रांसिस से मिलने वाले भारत के पांचवें प्रधानमंत्री हैं। अब सवाल है कि आखिर पोप को भारत आने का न्योता कितना अहम है? तो इसका जवाब है कि भारत एशिया में दूसरी सबसे बड़ी कैथोलिक आबादी वाला देश है।

संपादकीय

नीट से न्याय

नीट या मेडिकल प्रवेश परीक्षा विवाद को सुलझाने की कवायद जारी है, इसी कड़ी में सर्वोच्च न्यायालय ने शुक्रवार को नीट-यूजी परीक्षा के आयोजन को चुनौती देने वाली सात याचिकाओं को स्वीकार कर लिया। खास यह कि एक याचिका में इस बार के नीट-यूजी परीक्षा की सीबीआई जांच की मांग की गई है। न्यायालय ने केंद्र सरकार के अलावा राष्ट्रीय परीक्षण एजेंसी या एनटीए से भी जवाब मांगा है और अगली सुनवाई 8 जुलाई को बड़े फैसले की उम्मीद है। अब तक के घटनाक्रम से यह तो बिल्कुल साफ हो गया है कि इस बार की प्रवेश परीक्षा में कुछ बड़ी कमियां रह गई हैं। इस बात के भी स्पष्ट संकेत हैं कि परीक्षा के साथ कोई न कोई गंभीर खिलवाड़ हुआ है। यह सुखद है कि एनटीए ने भी ग्रेस मार्क्स के खेल पर ध्यान दिया है और 1,563 छात्रों को फिर टेस्ट में बैठना पड़ेगा। टेस्ट का यह फैसला न्यायोचित है, जिन बच्चों के साथ ग्रेस मार्क्स की वजह से नाइंसाफी हुई है, उन्हें अब न्याय मिलने की संभावना बढ़ गई है। बहरहाल, पूरी परीक्षा को नकार देने की कवायद ठीक नहीं है। लाखों विद्यार्थियों ने बहुत संसाधन और समय लगाकर परीक्षा दी है, उनके साथ न्याय होना चाहिए। अक्सर ऐसा होता है कि जो विद्यार्थी उत्तीर्ण नहीं होते, वे फिर से परीक्षा की मांग करते हैं, पर यहां किसी भी परीक्षा को न्यायोचित ढंग से ही देखना चाहिए। यहां भावना के ज्यादा मायने नहीं हैं। परीक्षा नियम-कायदे का मामला है, उसकी गुणवत्ता के साथ किसी भी तरह का समझौता किसी अन्याय से कम नहीं है। बहरहाल, कहीं न कहीं कुछ अन्याय हुआ है, तभी तो जगह-जगह उच्च न्यायालयों में परीक्षा को चुनौती दी गई है और एनटीए उचित ही चाहता है कि तमाम मामलों की सुनवाई एक ही जगह सर्वोच्च न्यायालय में हो। कोई आश्चर्य नहीं, एनटीए की ऐसी ही मांग पर संबंधित पक्षों को नोटिस जारी किया गया है। इस पर भी 8 जुलाई को सुनवाई होगी। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ व न्यायमूर्ति संदीप मेहता की अवकाश पीठ को पूरी कड़ाई के साथ प्रश्नपत्र लीक और कदाचार की सुनवाई करनी पड़ेगी। एक बड़ा खतरा यह है कि अगर कदाचार का सहारा लेने वाले माफिया अभी बच गए, तो मेडिकल प्रवेश परीक्षा पर हमेशा के लिए दाग लग जाएगा। यह संभव है कि इस कदाचार में एनटीए के भी कुछ लोग लिप्त रहे हों, अत- एनटीए की जांच पैनल पर कितना भरोसा किया जाए, यह फैसला अदालत को ही करना चाहिए। यह मांग शायद उचित है कि जांच अदालत की निगरानी में होनी चाहिए। अपने देश में मेडिकल की पढ़ाई का खर्च कई निजी संस्थानों में करोड़ों रुपये में पहुंच गया है। ऐसे में, सरकारी मेडिकल कॉलेजों में पढ़ाई के लिए जद्दोजहद तेज होती जा रही है। ध्यान रहे, मेडिकल प्रवेश परीक्षा 5 मई को 4,750 केंद्रों पर आयोजित की गई थी और लगभग 24 लाख विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया था। सबसे बड़ा शक तो यही है कि परिणाम 14 जून को घोषित करने के बजाय 4 जून को घोषित किए गए, उस दिन देश में मतगणना चल रही थी। क्या सफेदपोश लोगों ने यह सोचा कि चुनावी नतीजों के हो-हल्ले में उनका अपराध छिप जाएगा? क्या इसमें बड़े कोचिंग संस्थानों की भूमिका है? क्या अब अदालती जंग के पीछे भी चंद कोचिंग संस्थानों की प्रतिद्वंद्विता काम कर रही है? नीट से जुड़े अनेक बड़े सवाल हवा में तैर रहे हैं और सारी उम्मीदें सर्वोच्च अदालत पर टिकी हैं।

आज का राशीफल

मेष — बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें।

वृषभ — सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। वाणी की सौम्यता आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगी। धन लाभ के योग हैं।

मिथुन — जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। किसी मित्र या रिश्तेदार से धन लाभ के योग हैं। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे।

कर्क — संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

सिंह — पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। शासन सत्ता से तनाव मिलेगा। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

कन्या — आर्थिक योजना फलीभूत होगी। आय और व्यय में संतुलन बना कर रखें। कोई महत्वपूर्ण निर्णय न लें। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। भारी व्यय की संभावना है। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे।

तुला — जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। विरोधी परास्त होंगे।

वृश्चिक — बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। वाद-विवाद की स्थिति आपके लिए हितकर नहीं होगी।

धनु — व्यावसायिक योजना सफल होगी। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। वाद विवाद की स्थिति आपके लिए हितकर नहीं होगी।

मकर — पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। अनावश्यक व्यय हो सकता है।

कुम्भ — प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। आमोद-प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी।

मीन — रोजी रोजगार की दिशा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जनों से पीड़ा मिलेगी। धार्मिक यात्रा भी हो सकती है। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे।

पिता-पुत्र के संबंधों की संस्कृति को जीवंत बनाएं

(लेखक- ललित गर्ग)

(अंतर्राष्ट्रीय पिता दिवस- 16 जून, 2024)

किसी के भी जीवन में पिता की क्या भूमिका होती है, इसे शब्दों में बयां करने की भी जरूरत नहीं है। पिता हर संतान के लिए एक प्रेरणा हैं, एक प्रकाश हैं और संवेदनाओं के पुंज हैं। इसके महत्व को दर्शाने और पिता व पिता तुल्य व्यक्तियों के योगदान को सम्मान देने के लिए हर साल जून महीने के तीसरे रविवार को अंतर्राष्ट्रीय पिता दिवस यानी फादर्स डे मनाया जाता है। इस साल 16 जून 2024 को भारत समेत विश्वभर में यह दिवस मनाया जायेगा। फादर्स डे 2024 की थीम ''सेलिब्रेटिंग फादरहुड- स्ट्रेंथ, लव, एंड सैक्रिफाइस'' पर केंद्रित है यानी पितृ दिवस का जश्न- शक्ति, योगदान, प्रेम और बलिदान के प्रति सम्मान दर्शाने का एक विशेष अवसर है। दुनिया के अलग-अलग देशों में अलग-अलग दिन और विविध परंपराओं के कारण उत्साह एवं उमंग से यह दिवस मनाया जाता है। हिन्दू परंपरा के मुताबिक पितृ दिवस भाद्रपद महीने की सर्वपितृ अमावस्या के दिन होता है। पिता एक ऐसा शब्द जिसके बिना किसी के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। एक ऐसा पवित्र रिश्ता जिसकी तुलना किसी और रिश्ते से नहीं हो सकती।

हमारे ग्रन्थों में माता-पिता और गुरु तीनों को ही देवता माना गया है। इनकी सेवा और भक्ति में कसर रह जाए तो फिर ईश्वर की प्राप्ति संभव नहीं। और अगर हमने इनकी सेवा पूरे मन से की तो भगवान स्वयं कच्चे धागे से बंधे भक्त के पीछे-पीछे चल पड़ते हैं। आखिर श्रवण कुमार में ऐसा क्या खास था कि किसी भी भगवान से उनकी अहमियत कम नहीं है। माता-पिता की भक्ति और सेवा ने उसे भक्त प्रह्लाद और ध्रुव के बराबर का आसन दिलाया है। पिता चाहे कैसे भी वचन बोले, कैसा भी बर्ताव करे, संतान को उनके प्रति श्रद्धा और विनम्रता से आज्ञाकारी होना ही चाहिए। केवल इतना सूत्र भर साध लेने से हम उस ईश्वर के राज्य के अधिकारी बन जाते हैं, जिसे पाने के लिए जाने कितने तपस्वियों ने शरीर गलाया, बरसों साधना की। कन्धे पर माता-पिता को लेकर तीर्थ कराने निकला श्रवण जब उनकी प्यास बुझाने के लिए पानी भरते हुए राजा दशरथ का एक तीर लग जाने से प्राण त्यागता है, तब वह अन्तिम इच्छा में यही कहता है- 'मेरे माता-पिता प्यासे हैं, आप उन्हें जाकर पानी पिला दें।' प्राण त्यागते हुए भी जिसे अपने माता-पिता का ध्यान रहे, वह संतान उस युग में ही नहीं, इस युग में भी धन्य है। उसे किसी काल की परिधि में नहीं बांध सकते।

मानवीय रिश्तों में दुनिया में सबसे बड़ा स्थान मां को दिया जाता है, लेकिन एक बच्चे को बड़ा और सभ्य बनाने में उसके पिता का योगदान कम करके नहीं आंका जा सकता। बच्चे को जब कोई खरोंच लग जाती है तो जितना दर्द एक मां महसूस करती है, वही दर्द एक पिता भी महसूस करते हैं। यह अलग बात है कि बेटे को चोट लगने पर मां पुचकार देती है, चोट लगी जगह पर फूंक की ठंडक देती है, वहीं पिता अपने बेटे की चोट पर व्यथित तो होता है लेकिन उसे बेटे के सामने मजबूत बने रहना है। ताकि बेटा उसे देख कर जीवन की समस्याओं से लड़ने का पाठ सीखे, सख्त एवं निडर बनकर जिंदगी की तकलीफों का सामना करने में सक्षम हो। माँ ममता का सागर है पर पिता उसका किनारा है। माँ से ही बनता घर है पर पिता घर का सहारा है। माँ से स्वर्ग है माँ से बैकुंठ, माँ से ही चारों धाम है पर इन सब का द्वार तो पिता ही है। उन्हीं पिता के सम्मान में पितृ दिवस मनाया जाता है। आधुनिक समाज में पिता-पुत्र के संबंधों की संस्कृति को जीवंत बनाने की अपेक्षा है।

सोनेरा डोड जब नन्ही-सी थी, तभी उनकी मां का देहांत हो गया। पिता विलियम स्मार्ट ने सोनेरो के जीवन में मां की कमी नहीं महसूस होने दी और उसे मां का भी प्यार दिया। एक दिन यूं ही सोनेरा के दिल में ख्याल आया कि आखिर एक दिन पिता के नाम क्यों नहीं हो सकता? इस तरह 19 जून 1910 को पहली बार फादर्स डे मनाया गया। 1924 में अमेरिकी राष्ट्रपति कैल्विन कोली ने फादर्स डे पर अपनी सहमति दी। फिर 1966 में राष्ट्रपति लिंडन जानसन ने जून के तीसरे रविवार को फादर्स डे मनाने की आधिकारिक घोषणा की।

एक शिल्पकार प्रतिमा बनाने के लिए जैसे पत्थर को कहीं काटता है, कहीं छांटता है, कहीं तल को चिकना करता है, कहीं तराशता है तथा कहीं आवृत को अनावृत करता है, वैसे ही मेरे पूज्य पिताश्री रामस्वरूपजी गर्ग ने मेरे व्यक्तित्व को तराशकर उसे महनीय और सुघड़ रूप प्रदान किया। आज वे देह से विदेह होकर भी हर पल मेरे साथ प्रेरणा के रूप में, शक्ति के रूप में, संस्कार के रूप में रहते हैं। हर पिता अपने पुत्र की निषेधात्मक और दुष्प्रवृत्तियों को समाप्त करके नया जीवन प्रदान करता है। वरुण जल का देवता होता है। जैसे जल वस्त्र आदि के मैल को दूर करता है, वैसे ही पिता पुत्र की मानसिक कलुषता को दूर कर सद्संस्कारों का बीजारोपण करता है एवं उसके व्यक्तित्व को नव्य और स्वच्छ रूप प्रदान करता है। चन्द्रमा सबको शांति और अह्लाद प्रदान करता है, वैसे ही पिता की प्रेरणाएं पुत्र को मानसिक प्रसन्नता और परम शांति देती है। जैसे औषधि दुख, दर्द और पीड़ा का हरण करती है, वैसे ही पिता शिव शंकर की भांति पुत्र के सारे अवसाद और दुखों का हरण करते हैं। पय का अर्थ है-दूध। जैसे माता का दूध पुष्टि प्रदान करता है, वैसे ही पिता पुत्र के आत्मिक बल को पुष्ट करते हैं। मेरे लिये मेरे पिता देवतुल्य एवं गहन आध्यात्मिक-धार्मिक जीवट वाले व्यक्तित्व थे। उनकी जैसी सादगी, उनकी जैसी सरलता, उनकी जैसा समर्पण, उनकी जैसी धार्मिकता, उनकी जैसी पारिवारिक नेतृत्वशीलता और उनकी जैसी संवेदनशीलता को जीना दुर्लभ है। उन्होंने परिवार एवं समाज को समृद्धशाली और शक्तिशाली बनाने की दृष्टि से उल्लेखनीय कार्य किया। मेरे लिये तो वे आज भी दिव्य ऊर्जा के केन्द्र हैं।

पिता आंसुओं और मुस्कान का एक समुच्चय है, जो बेटे के दुख में रोता तो सुख में हंसता है। उसे आसमान छूता देख अपने को कद्दावर मानता है तो राह भटकते देख अपनी किस्मत की बुरी लकीरों को कोसता है। पिता गंगोत्री की वह बूंद है जो गंगा सागर तक एक-एक तट, एक-एक घाट को पवित्र करने के लिए धोता रहता है। पिता वह आग है जो घड़े को पकाता है, लेकिन जलाता नहीं जरा भी। वह ऐसी चिंगारी है जो जरूरत के वक्त बेटे को शोले में तब्दील करता है। वह ऐसा सूरज है, जो सुबह पक्षियों के कलरव के साथ धरती पर हलचल शुरू करता है, दोपहर में तपता है और शाम को धीरे से चांद को लिए रास्ता छोड़ देता है। पिता वह पूनम का चांद है जो बच्चे के बचपने में रहता है, तो धीरे-धीरे घटता हुआ क्रमशः अमावस का हो जाता है। पिता समंदर के जैसा भी है, जिसकी सतह पर असंख्य लहरें खेलती हैं, तो जिसकी गहराई में खामोशी ही खामोशी है। वह चखने में भले खारा लगे, लेकिन जब बारिश बन खेतों में आता है तो मीठे से मीठा हो जाता है। बचपन में चॉकलेट, खिलौने दिलाने से लेकर युवावर्ग तक बाइक, कार, लैपटॉप और उच्च शिक्षा के लिए विदेश भेजने तक संतान की सभी माँगों को पिता ही पूरा करते रहते हैं लेकिन एक समय ऐसा आता है जब भागदौड़ भरी इस जिंदगी में बच्चों के पास अपने पिता के लिए समय नहीं मिल पाता है। इसी को ध्यान में रखकर पितृ दिवस मनाने की परंपरा का आरम्भ हुआ।

भारतीय समाज में पिता की अवधारणा

(लेखिका- डॉ. श्रीमती शारदा मेहता)

(अंतर्राष्ट्रीय फादर डे 16 जून। 2024 के विशेष अवसर पर लेख)

भारतीय संस्कृति में पिता परिवार की धुरी होता है। उसका स्थान सर्वोपरि है। पांडव वनवास के समय जंगल में घूम रहे थे। वे प्यास से व्याकुल होने के कारण जलाशय, ढूँढ रहे थे। उन्हें एक स्थान पर जलाशय मिला। सर्वप्रथम सहदेव जलाशय पर पहुँचा। उसने हाथ में जल लेकर पीने का प्रयत्न किया। सहसा एक अदृश्य आवाज ने सहदेव से कहा कि मेरे प्रश्नों के उत्तर देकर ही जल ग्रहण करो। परन्तु सहदेव ने जल पी लिया और वह अचेत हो गया। उसके बाद नकुल, अर्जुन तथा भीम की भी वही स्थिति हुई। अंत में धर्मराज युधिष्ठिर आये। अपने चारों भाईयों की मृतप्राय अवस्था देखकर उन्हें शंका हुई। वे भी जलाशय के पास पहुँचे। अदृश्य आवाज से उन्होंने परिचय पूछा। वह एक यक्ष की आवाज थी। उसने युधिष्ठिर से अठारह प्रश्न पूछे। सही उत्तर प्राप्त होने पर चारों भाई जीवित हो गये। उन प्रश्नों में एक प्रश्न था कि आकाश से ऊँचा कौन है? युधिष्ठिर ने तपाक से उत्तर दिया, ''पिता卐। वास्तव में सर्वोच्च स्थान पिता को ही प्राप्त है।

पिता बालक को उसकी जीवन यात्रा में सही दिशा प्रदान करते हैं। उसे स्वअनुशासित जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करते हैं। वह चाहते हैं कि उनका पुत्र उद्दंड न बने। सही रास्ता अपनाकर जीवन में उत्तरोत्तर ऊँचाइयों को प्राप्त कर पिता का नाम रोशन करे। पिता की अभिलाषा रहती है कि उनकी सन्तान बलिष्ठ बनें, किसी के सामने झुके नहीं और प्रत्येक समस्या का निदान निडर होकर करे। पिता सर्वदा हर क्षण कदम - कदम पर आने वाली समस्याओं के प्रति सचेत करते रहते हैं। एक सफल पिता की यह हार्दिक अभिलाषा रहती है कि जो कष्ट उन्होंने स्वयं उठाए हैं वह उनकी संतान को न उठाने पड़े। पिता चाहते हैं कि उनकी सन्तान जीवन में किसी से धोखा न खाये और समस्याओं का निदान निपुणता से बिना झुंझलाहट के कर ले'। संस्कृत साहित्य के किसी विद्वान् कवि ने कहा है- -

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः।
जनकः पंचमश्चैव जकाराः पंच दुर्लभाः।।

अर्थात् ये पाँच ''ज कार'' इस संसार में दुर्लभ है। जननी (माता), जन्मभूमि (स्वदेश) जाह्नवी (गंगा नदी), जनार्दन (भगवान श्रीकृष्ण) तथा जनकः (पिता) इन पाचों का सुख संसार में भाग्यशाली व्यक्ति को ही प्राप्त होता है।

भगवान विष्णु के साक्षात् अवतार श्रीराम को माता कैकेयी के हठ के कारण पिता दशरथ जी वन को भेजते हैं तो भगवान श्रीराम धीर - गंभीर होकर सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। जननी कौसल्या से वन गमन की आज्ञा माँगने जाते हैं। माता कौसल्या के हृदय की विशालता देखिये -

सरल सुभाउ राम महतारी। बोली वचन धीर धरि भारी।।
तात जाउँ बलि कीन्हेउ नीका। पितु आयसु सब धरमक टीका।।
श्रीरामचरितमानस, अयो. दो. 54 चै. 4

अर्थात् सरल स्वभाव वाली श्रीरामचन्द्रजी की माता बड़ा धीरज धरकर वचन बोलीं - हे तात! मैं बलिहारी जाती हूँ, तुमने अच्छा किया। पिता की आज्ञा का पालन करना ही सब धर्मों का शिरोमणि धर्म है। पिता का स्नेह केवल पुत्र पर ही नहीं पुत्री पर भी उतना ही रहता है। मनोवैज्ञानिकों के मतानुसार पिता अपनी पुत्री पर अधिक स्नेह करते हैं। माँ यदि अपनी बेटी को यदा - कदा डाँटती है, दुनिया की ऊँच - नीच के बारे में उसे कुछ समझाती है तो पिता माँ को एक झिड़की देकर टोक देता है और कहते हैं कि समय आने पर, जिम्मेदारी सिर पर पड़ने पर मेरी लाड़ली सब कुछ कर लेगी। वह तुमसे भी अच्छी बनेगी।

बचपन में मैंने किसी पत्रिका में एक कहानी पढ़ी थी। सुज्ञ पाठकगण। उसका रसास्वादन करें। माता - पिता अपनी लाड़ली के लिए वर तलाश रहे थे। प्रत्येक लड़के में कुछ न कुछ मीन - मेख निकाली जा रही थी। पिता का कथन था कि मैं अपनी बेटी के लिए ऐसा राजकुमार सा वर ढूँढना चाहता हूँ जो मेरी लाड़ली को राजरानी बनाकर रखे और उसे किसी भी प्रकार की कमी न होने दे। मेरी बेटी उसके साथ हमेशा हँसती खिलखिलाती रहे आदि - आदि। बेटी ने पिता के कन्धे पर हाथ रख कर पूछा - पिता जी मेरे नाना जी ने भी आप में ऐसा ही राजकुमार ढूँढा होगा, फिर आप माँ को क्यों हमेशा उलहना देकर रूलाते रहते हो ऐसी होती है एक पिता की पुत्री के प्रति स्नेहासक्ति। ससुराल में भी बेटी की बिदाई के समय आशीर्वाद स्वरूप पिता का सिर पर रखा हाथ सर्वदा स्मरण रहता है। पुत्री पिता के सुख - दुःख का सहारा बनना चाहती है, पर वह अपने बाल - बच्चों की व्यस्तता में पिता को याद तो कर ही लेती है।

आधुनिक एकल परिवार तथा व्यस्त जीवन शैली ने हमारे संवेदनात्मक मानवीय रिश्तों को समाप्त सा कर दिया है। लिखित पत्रों के माध्यम से भी दूरी बन गई है। केवल फोन तथा व्हाट्सएप पर ही सुख - दुःख के समाचार भेजकर तथा पढ़कर आत्मीयता व्यक्त कर दी जाती है और इसी में सुखानुभूति कर ली जाती है। सब की अपनी - अपनी विवशता है। पुत्र हो या पुत्री पिता परिवार का संबल है और उसका वर्चस्व सर्वोपरि है। आज भी पिता का स्थान परिवार में केन्द्र बिन्दु का है।

विचार मंथन

गंगा जीवनदायिनी के साथ ही मुक्ति दात्री भी!

(लेखक- डॉ श्रीगोपाल नारसन)

(गंगा दशहरा 16 जून पर)

अपने पूर्वजों की आत्मा के उद्धार के लिए भागीरथ गंगा को पृथ्वी पर लेकर आए थे। इसी लिए गंगा दशहरा को गंगा अवतरण के दिन के रूप में मनाया जाता है।इस दिन गंगा स्नान करके दान करने का विशेष महत्व है।गंगा दशहरा ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि के दिन मनाया जाता है। हिंदू धर्म में इस तिथि को बेहद ही शुभ माना गया है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार गंगा में डुबकी लगाने से व्यक्ति के पाप धुल जाते हैं और उसे सुख-समृद्धि का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। शास्त्रों में गंगा को मोक्षदायिनी भी कहा गया है। गंगा शिव की जटाओं से निकलती हैं, इसलिए इस दिन शिव की भी पूजा करनी चाहिए।इस बार 16 जून के दिन गंगा दशहरा मनाया जा रहा है। इस दिन स्नान के लिए ब्रह्म मुहूर्त बेहद शुभ होता है। गंगा दशहरा के शुभ अवसर पर सुबह 7 बजकर 8 मिनट से सुबह 10-37 तक शुभ मुहूर्त है। जिस दिन मां गंगा का धरती पर अवतरण हुआ था,उस पवित्र दिन को गंगा दशहरा के रूप में मनाया जाता है। अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए भागीरथ गंगा को पृथ्वी पर लेकर आए थे।जिसके लिए उन्होंने कठिन तपस्या भी की थी। गंगा दशहरा पर हर वर्ष गंगा में आस्था की डुबकी लगाई जाती हैं। ऐसा कहते हैं कि इस दिन गंगा में स्नान करने से 10 प्रकार के पाप मिट जाते हैं।गंगा में डुबकी लगाते समय 'ऊँ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै नमः' मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। घर में नहाने के पानी में गंगाजल मिलाकर भी स्नान किया जा सकता हैं। गंगा दशहरा के दिन दान करने का विशेष महत्व बताया गया है। इस दिन दान-धर्म के कार्य करना बहुत ही शुभ माना जाता है। दशहरा का अर्थ 10 मनोविकारों के विनाश से है। ये दस मनोविकार हैं-क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी।जिनसे मुक्ति के लिए ज्ञान गंगा का स्नान करने से हम विकारमुक्त होकर पवित्र बन सकते है। राजा भागीरथ की कठोर तपस्या, उनके अथक प्रयास और परिश्रम से इसी दिन गंगा ब्रह्मा जी के कमंडल से निकलकर शिव की जटाओं में विराजमान हुई थी और शिवजी ने अपनी शिखा को खोल कर गंगा को धरती पर जाने की अनुमति दी थी। इसलिए गंगा के धरा अवतरण दिवस को गंगा दशहरा के नाम से जाना जाता है। गंगा दशहरा के दिन प्रातः काल गंगा में स्नान करके मां गंगा की आरती करने से समस्त पापों का विनाश हो जाने की धार्मिक मान्यता है। गंगा का जल हमेशा पवित्र व गुणकारी होता है,उसमें कभी भी कीड़े नहीं पड़ते और इसका जल प्रदूषित नहीं होता । इसलिए इस जल में स्नान करने से रोगों का विनाश हो जाता है। गंगा दशहरा के दिन स्नान, ध्यान और तर्पण करने से शरीर शुद्ध और मानसिक विकारों से मुक्त हो जाता है।अमृत दायिनी मां गंगा के स्पर्श मात्र से ही चराचर जीवो के पापों का अंत हो जाता है और उसे मुक्ति मिल जाती है। कहते है कि एक बार महाराज सगर ने एक बड़ा यज्ञ किया। उस यज्ञ की रक्षा का भार उनके पौत्र अंशुमान ने संभाला। इंद्र ने सगर के यज्ञीय अश्व का अपहरण कर लिया। यह यज्ञ के लिए विघ्न था। परिणाम स्वरूप अंशुमान ने सगर की साठ हजार प्रजा लेकर अश्व को खोजना शुरू कर दिया। सारा भूमंडल खोज लिया पर अश्व नहीं मिला।फिर अश्व को पाताल लोक में खोजने के लिए पृथ्वी को खोदा गया। खुदाई पर उन्होंने देखा कि साक्षात भगवान महर्षि कपिल के रूप में तपस्या कर रहे हैं। उन्हीं के पास महाराज सगर का अश्व घास चर रहा है। प्रजा उन्हें देखकर चोर-चोर चिल्लाने लगी। महर्षि कपिल की समाधि टूट गई। ज्यों ही महर्षि ने अपने आग्नेय नेत्र खोले, त्यों ही सारी प्रजा भस्म हो गई। इन मृत लोगों के उद्धार के लिए ही महाराज दिलीप के पुत्र भगीरथ ने कठोर तपस्या की थी।भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उनसे वर मांगने को कहा तो भगीरथ ने गंगा की मांग की।इस पर ब्रह्मा ने कहा- राजन! तुम गंगा का पृथ्वी पर अवतरण तो चाहते हो? परंतु क्या तुमने पृथ्वी से पूछा है कि वह गंगा के भार तथा वेग को संभाल पाएगी? मेरा विचार है कि गंगा के वेग को संभालने की शक्ति केवल भगवान शंकर में है। इसलिए उचित यह होगा कि गंगा का भार एवं वेग संभालने के लिए भगवान शिव का अनुग्रह प्राप्त कर लिया जाए। महाराज भगीरथ ने वैसा ही किया। उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने गंगा की धारा को अपने कमंडल से छोड़ा। तब भगवान शिव ने गंगा की धारा को अपनी जटाओं में समेटकर जटाएं बांध लीं। इसका परिणाम यह हुआ कि गंगा को जटाओं से बाहर निकलने का पथ नहीं मिल सका।अब महाराज भगीरथ को और भी अधिक चिंता हुई। उन्होंने एक बार फिर भगवान शिव की घोर तपस्या शुरू की। तब कहीं जाकर भगवान शिव ने गंगा की धारा को मुक्त करने का वरदान दिया। इस प्रकार शिवजी की जटाओं से छूट कर गंगाजी हिमालय की घाटियों में कल-कल निनाद करके मैदान की ओर आई।इस प्रकार भगीरथ पृथ्वी पर गंगा का वरण करके बड़े भाग्यशाली हुए। उन्होंने जनमानस को अपने पुण्य से उपकृत कर दिया। युगों-युगों तक बहने वाली गंगा की धारा महाराज भगीरथ की साधना की गाथा कहती है। गंगा प्राणीमात्र को जीवनदान ही नहीं देती, मुक्ति भी देती है। (लेखक आध्यात्मिक चिंतक व वरिष्ठ पत्रकार है)

छायादार वृक्ष के समान है पिता

फादर्सडेः

पिता अर्थात छायादार वह बड़ा वृक्ष, जिसमें बचपने की गौरेया बनाती है घोसला...। पिता अर्थात वह अंगुली, जिसे पकड़कर अपने पांव पर खड़ा होना सीखता है, घुटनों के बल चलने वाला...। पिता अर्थात वह कांधा, जिस पर बैठकर शहर की गलियों से दोस्ती करता है नन्हा मुसाफिर...।

पिता अर्थात एक जोड़ी वह आंख, जिसकी पलकों में अंकुरते हैं बेटे को हर तरह से बड़ा करने के हजारों सपने...। पिता अर्थात वह पीठ, जो बेटे को घुड़सवारी करवाने के लिए तैयार रहती है हरदम...।

पिता अर्थात वह लाठी, जो छोटे पौधे को सीधा करने के लिए खड़ी और गड़ी रहती है साथ-साथ...। पिता अर्थात हाड़-मांस की वह काया, जिसमें पलता है बच्चों का दुलार-संस्कार...। पिता अर्थात वह ईश्वर, जिसका अनुवाद होता है, आदमी की शक्ल में।

वेद की वह पवित्र किताब है पिता, जिसमें लिखी हैं पुरखों के परिचय की ऋचाएं, जिसे पढ़कर जाना जा सकता है मनुष्य का जन्म, जिसकी आंखों में झांककर देखा जा सकता है आदम का रूप। जो अपनी संतान के लिए ढोता है पीड़ाओं का पहाड़, दर्द के हिमालय लेकर दौड़ता है रात-दिन, लेकिन उफ तक नहीं करता। अपनी नींद गिरवी कर संतान के लिए घर लाता है चुटकीभर चैन।

कभी राम के वियोग में दशरथ बनकर तड़प-तड़पकर त्याग देता है प्राण, कभी अभिमन्यु के विरह में अर्जुन बन संहार कर देता है कौरवों की सेना का, तो कभी पुत्र मोह में हो जाता है धृतराष्ट्र की तरह नेत्रहीन। पिता वह रक्त जो दौड़ता रहता है संतान की धमनियों में। जो चमकता है संतान के गालों पर और दमकता है उसके माथे पर।

पिता साथ चलता है तो साथ देते हैं तीनों लोक, चौदहों भुवन। पिता सिर पर हाथ रखता है तो छोटे लगते हैं देवी-देवताओं के हाथ। पिता हंसता है तो शर्म से पानी-पानी हो जाते हैं हेमंत और बसंत। पिता जब मार्ग दिखाता है तो चारों दिशाएं छोड़ देती हैं रास्ता, आसमान आ जाता है बांहों के करीब और धरती सिमट आती है कदमों के आसपास।

पिता जब नाराज होता है तो आसमान के एक छोर से दूसरे छोर तक कड़क जाती है बिजली, हिलने लगती है जिंदगी की बुनियाद। पिता जब टूटता है तो टूट जाती हैं जाने कितनी उम्मीदें, पिता जब हारता है तो पराजित होने लगती हैं खुशियां।

जब उठता है सिर से पिता का साया तो घर पर एक साथ टूट पड़ते हैं कई-कई पहाड़। पिता की सांस के जाते ही हो जाती है कई की सपनों की अकाल मौत।

पिता बिना अस्तित्व अधूरा...

कहते हैं मां के चरणों में स्वर्ग होता है, मां बिना जीवन अधूरा है लेकिन अगर मां जीवन की सच्चाई है तो पिता जीवन का आधार, मां बिना जीवन अधूरा है तो पिता बिना अस्तित्व अधूरा। जीवन तो मां से मिल जाता है लेकिन जीवन के थपेड़ो से निपटना तो पिताजी से ही आता है, जिंदगी की सच्चाई के धरातल पर जब बच्चा चलना शुरू करता है तो उसके कदम कहां पड़े और कहां नहीं.. ये समझाने का काम पिता ही करते हैं। समाज की बंदिशो से अपने बच्चे को निकालने का काम एक पिता ही कर सकता है। पिता अगर पास है तो किसी बच्चे को असुरक्षा नहीं होती है। पिता एक वट वृक्ष है जिसके पास खड़े होकर बड़ी से बड़ी परेशानी छोटी हो जाती है। वक्त आने पर वो दोस्त बन जाते है तभी तो हर लड़की अपने जीवन साथी में अपने पिता का अक्स खोजती है। जिस तरह उसके पिता उसके पास जब होते हैं तो उसे भरोसा होता है कि कोई भी नापाक इरादे उसे छू नहीं सकते हैं। उसे अपनी सुरक्षा और ना टूटने वाले भरोसे पर गर्व होता है इसलिए वो जब भी अपने साथी के बारे में सोचती है तो उसकी कल्पनाओं में उसके पिता जैसी ही कोई छवि विद्दमान होती है। जबकि हर बेटे की ख्वाहिश होती है कि वो ऐसा कुछ करे जिससे उसके पिता का सीना चौड़ा हो जाये। उनकी मुस्कुराहट और आंखो की चमक सिर्फ और सिर्फ अपने पिता के लिए होती है। उसकी पहली कामयाबी तब तक अधूरी होती है जब तक उसके पिता आकर उसकी पीठ नहीं थपथपाते हैं। अक्सर बाप-बेटे एक -दूसरे से भावनाओं का आदान-प्रदान नहीं करते हैं लेकिन सबको पता है कि दोनों ही के दिल में प्रेम का अनुपम समंदर विद्दमान होता है। कभी उस पिता की आंखो में झांकने की कोशिश कीजिये जब उसका बेटा उसके सामने अपनी पहली कमाई लेकर आता है। इसलिए तो कहते है कि पिता का कर्ज आप तब ही चुका सकते है जब आप अपने जैसे ही किसी नन्हे प्राणि को धरती पर लाते हैं। इसलिए तो कवि गिरिराज जोशी ने कहा है.. पापा! मुझे लगता था, 'मां' ने मुझे आपार स्नेह दिया, आपने कुछ भी नहीं, आप मुझसे प्यार नहीं करते थे। मगर पापा! आज जब जीवन की, हर छोटी-बड़ी बाधाओं को, आपके 'वे लम्बे-लम्बे भाषण' हल कर देते है, मैं प्यार की गहराई जान जाता हूँ.... तो चलिए देर किस बात की है ..जाइये अपने पिता के पास और पैर छूकर अपने आप को धन्य कीजिये और जीवन की सच्चाई से रूबरू कराने के लिए उन्हें तहे दिल से धन्यवाद दीजिये। हैप्पी फादर्स डे....

पापा के नाम एक दिन

आप सभी की छुट्टियां तो बड़े मजे में बीत रही होगी। एक बात तो बताओ जरा, आपको हर साल नए-नए खिलौने कौन दिलाता है? कौन आपको घुमाने ले जाता है? कौन है, जो आपकी सारी जरूरतें पूरी करते है, आपको मोबाइल, लैपटॉप और न जाने नई-नई चीजें कौन दिलाता है, आपके पापा ना...! जैसे रोज हमें अपने पापा खुश करते है, वैसे ही अब आप भी अपने पापा को खुश कर सकते हैं। कहने का मतलब है कि पापा को खुश करने का दिन आ गया है। 16 जून को फादर्स डे है। इस दिन दुनिया के सभी बच्चे अपने पापा

को प्यारा-सा कोई न कोई गिफ्ट उपहारस्वरूप देते हैं। आप भी जल्दी से सोचना शुरू कीजिए कि अपने पापा को आपको क्या गिफ्ट देना है। वैसे हमारी टिनी ने तो सोच लिया है, कि वो अपने पापा को हाथ से बनाकर एक ग्रीटिंग कार्ड देगी। उसने तो कार्ड बनाना शुरू भी कर दिया है, आप भी जल्दी से शुरू कर दीजिए और अपने पापा को अपने हाथों से बना उपहार देकर उनकी खुशी दोगुनी बढ़ा दीजिए।

केंद्र की मोदी सरकार ने कच्चे तेल पर घटाया विंडफॉल टैक्स

-5,200 रुपए से घटाकर 3,250 रुपए प्रति टन किया

नई दिल्ली। केंद्र की मोदी सरकार ने कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स घटाते हुए इसे 3,250 रुपए प्रति टन कर दिया है। पिछले पखवाड़े यह 5,200 रुपए प्रति टन था। सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार टैक्स की नई दर 15 जून से प्रभावी हो गई है। डीजल, पेट्रोल और विमान ईंधन पर विंडफॉल टैक्स को शून्य पर बरकरार रखा है। सरकार हर 15 दिन में विंडफॉल टैक्स की समीक्षा करती है। हाल के महीनों में कई बार कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स कम किया गया है। एक जून को इसे 5,700 रुपए प्रति टन से घटाकर 5,200 रुपए प्रति टन किया गया था। वहीं, 16 मई को केंद्र सरकार ने कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स 8,400 रुपए से घटाकर 5,700 रुपए प्रति टन किया था। इससे पहले एक मई को इसे 9,600 रुपए से घटाकर 8,400 रुपए प्रति टन किया था। कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स कम करने का सीधा असर घरेलू स्तर पर पेट्रोलियम उत्पादक कंपनियों जैसे ओएनजीसी और ऑयल इंडिया को मिलता है। कच्चे तेल की कीमत बढ़ने के कारण कंपनियों को हो रहे अप्रत्याशित लाभ पर विंडफॉल टैक्स लगाया जाता है। इस टैक्स की शुरुआत जुलाई 2022 से की गई थी।

सेबी ने ग्रोवैल्यू फिन सर्विसेज का पंजीकरण रद्द किया

नई दिल्ली। बाजार नियामक सेबी ने नियामकीय मानकों का उल्लंघन करने पर ग्रोवैल्यू फाइनेंशियल सर्विसेज का पंजीकरण प्रमापपत्र रद्द कर दिया। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने अप्रैल 2021 से अगस्त 2022 तक सेबी के पास पंजीकृत अनुसंधान विश्लेषक फर्म ग्रोवैल्यू फाइनेंशियल सर्विसेज से जुड़े मामलों का निरीक्षण किया। निरीक्षण इसे लिए किया गया था कि क्या फर्म के बहीखाते और रिकॉर्ड सही ढंग से तैयार किए जा रहे थे और क्या फर्म सेबी के अनुसंधान विश्लेषक मानदंडों के प्रावधानों का पालन कर रही थी। सेबी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने अपने आदेश में कहा कि नोटिस प्राप्तकर्ता (ग्रोवल्यू फाइनेंशियल सर्विसेज) ने अनुसंधान विश्लेषक विनियमों के प्रावधानों का उल्लंघन किया है और अपने पंजीकरण प्रमापपत्र की शर्तों का पालन करने में विफल रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए उसका पंजीकरण प्रमापपत्र रद्द किया जा रहा है।

असम में वर्ष 2027 तक 3,000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्यः हिमंत

गुवाहाटी। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने कहा कि राज्य 2027 तक 3,000 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन का लक्ष्य बना रहा है। शर्मा ने डिब्रूगढ़ के नामरूप में 25 मेगावाट के सौर ऊर्जा संयंत्र की आधारशिला रखते हुए कहा कि यह पर्यावरण के प्रति राज्य का योगदान होगा। उन्होंने कहा कि हम पहले से ही 200 मेगावाट सौर ऊर्जा उत्पादन की प्रक्रिया में हैं। इस वर्ष के भीतर बाकी क्षमता के लिए काम शुरू हो जाएगा। उन्होंने कहा कि नामरूप संयंत्र 115 करोड़ रुपये की लागत से बनाया जाएगा और चालू हो जाने पर यह हरित ऊर्जा व्यवस्था की तरफ राज्य की बहुआयामी रणनीति में शामिल हो जाएगा। असम पावर जनरेशन कॉरपोरेशन और ऑयल इंडिया लिमिटेड के बीच एक संयुक्त उद्यम (जेवी) वाली इस परियोजना के जुलाई, 2025 तक पूरी होने की संभावना है। शर्मा ने कहा कि राज्य में फिलहाल सात सौर ऊर्जा संयंत्र संचालित हैं, जिनसे प्रतिदिन 175 मेगावाट बिजली पैदा होती है।

आरबीआई ने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया पर लगाया 1.45 करोड़ का जुर्माना

मुंबई।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया पर 1.45 करोड़ रुपए का भारी जुर्माना लगाया है। बैंक पर यह जुर्माना लोन और एडवांसेज तथा कंप्यूमर प्रोटेक्शन से जुड़े निर्देशों का पालन न करने पर लगाया गया है। आरबीआई की ओर से यह जानकारी दी गई है। आरबीआई ने 31 मार्च, 2022 तक की वित्तीय स्थिति के संदर्भ में सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया के पर्यवेक्षी मूल्यांकन (आईएसई 2022) के लिए इसका वैधानिक निरीक्षण किया था। सार्वजनिक क्षेत्र के इस बैंक को नोटिस जारी कर यह बताने को कहा गया था कि निर्देशों का पालन करने में विफल रहने पर उस पर जुर्माना क्यों न लगाया जाए। बैंक के जवाब पर गौर करने के बाद आरबीआई को पाया कि बैंक के विरुद्ध लगाए गए आरोप सही हैं। बैंक ने सब्सिडी के रूप में सरकार से प्राप्त होने वाली राशि के एवज में एक कंपनी को कार्यशील पूंजी मांग ऋण स्वीकृत किया था। इसके साथ ही बैंक कुछ अनधिकृत इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन के मामलों में शामिल राशि को भी निर्धारित समय के भीतर ग्राहकों के खाते में जमा नहीं कर पाया। आरबीआई ने एक अन्य बयान में कहा कि केवाईसी निर्देश, 2016 सहित कुछ मानदंडों का पालन न करने के लिए सोनाली बैंक पीएलसी पर 96.4 लाख रुपए का जुर्माना लगाया गया है। आरबीआई ने कहा कि दोनों मामलों में लगाए दंड नियामकीय अनुपालन में खामियों पर आधारित हैं और इसका उद्देश्य संस्थाओं द्वारा अपने ग्राहकों के साथ किए गए किसी भी लेनदेन या समझौते की वैधता पर निर्णय लेना नहीं है।

एयरटेल ने स्पेक्ट्रम के लिए मिले 7,904 करोड़ का बकाया चुकाया

नई दिल्ली। दूरसंचार सेवा प्रदाता भारती एयरटेल ने कहा है कि उसने 2012 और 2015 में आवंटित स्पेक्ट्रम के लिए दूरसंचार विभाग को 7,904 करोड़ रुपये का पूरा बकाया का भुगतान कर दिया है। एयरटेल ने 2012 की नीलामी में 8.67 करोड़ रुपये और 2015 की नीलामी में 29,129 करोड़ रुपये मूल्य के स्पेक्ट्रम सरकार से हासिल किए थे। एयरटेल ने एक बयान में कहा कि दूरसंचार विभाग को 7,904 करोड़ रुपये का पूर्व-भुगतान कर दिया गया है। इसके साथ ही कंपनी ने वर्ष 2012 और 2015 की नीलामी में प्राप्त स्पेक्ट्रम से संबंधित सभी स्थगित देनदारियों का पूर्ण भुगतान कर दिया है। कंपनी ने कहा कि ये देनदारियां 2012 में हासिल स्पेक्ट्रम पर 9.75 प्रतिशत की दर से थीं जबकि 2015 की नीलामी में मिले स्पेक्ट्रम के लिए इसकी ब्याज दर 10 प्रतिशत थी।मार्च, 2024 के अंत तक एयरटेल का एकीकृत ऋण घटकर 2,04,646 करोड़ रुपये हो गया।

एसबीआई ने एमसीएलआर दर बढ़ाई, घर के लिए लोन लेना होगा महंगा

नई दिल्ली। अब घर का सपना देख रहे लोगों को बैंक से लोन महंगा पड़ सकता है। देश के प्रमुख बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने एमसीएलआर रेट में 0.1 फीसदी की बढ़ोतरी की है, जिससे लोन लेने वाले उपभोक्ताओं पर ईएमआई का बोझ बढ़ सकता है। यानी कि अब लोन पर ज्यादा ईएमआई चुकाना होगा। वहीं स्टेट बैंक की वेबसाइट के मुताबिक एमसीएलआर की नई दर 15 जून से लागू हो गई है। इस बदलाव के साथ ही एक साल का एमसीएलआर रेट बढ़कर 8.75 फीसदी हो गया है, जो पहले 8.65 फीसदी था। दर में बदलाव के बाद ओवरनाइट एमसीएलआर अब 8.00 फीसदी से बढ़कर 8.10 फीसदी हो गया है, जबकि एक महीने और तीन महीने का एमसीएलआर 8.20 फीसदी से बढ़कर 8.30 फीसदी हो गया है। छह महीने का एमसीएलआर अब 8.55 फीसदी से बढ़कर 8.65 फीसदी हो चुका है। इसके अलावा दो साल का एमसीएलआर 8.75 फीसदी से बढ़कर 8.85 फीसदी हो गया है और तीन साल का एमसीएलआर अब 8.85 फीसदी से बढ़कर 8.95 फीसदी हो गया है। यानी कि अब आपको हर महीने पहले से ज्यादा लोन पर ईएमआई चुकाना होगा। बता दें कि होम और ऑटो लोन समेत ज्यादातर रिटेल लोन एक साल की एमसीएलआर दर से जुड़े हैं। एमसीएलआर में बढ़ोतरी से आरबीआई रेपो रेट या ट्रेजरी बिल यील्ड जैसे बाहरी बेंचमार्क से जुड़े कर्ज लेने वाले कस्टमर्स पर इसका कोई असर नहीं पड़ता है। अबे ट्रबर 2019 से एसबीआई समेत बैंकों को नए लोन को इन बाहरी बेंचमार्क से जोड़ना आवश् यक हो गया है।

सेंसेक्स और निफ्टी ने बनाया नया रिकॉर्ड

- सेंसेक्स 181 अंकों की बढ़त के साथ 76,992 पर बंद

- निफ्टी 66 अंक मजबूत होकर 23,465 पर बंद

मुंबई।

चुनिंदा शेयरों की लिवाली और निर्यात के आंकड़ों से घरेलू शेयर बाजार कारोबारी सप्ताह के आखिरी दिन शुक्रवार को जोरदार तेजी के साथ बंद हुए। बाजार के जानकारों ने कहा` कि विदेशी` निवेशकों की खरीदारी से भी शेयर बाजार प्रभावित हुआ। घरेलू शेयर बाजार में बीते सप्ताह के पांच कारोबारी` दिनों में से दो ` दिन` गिरावट और तीन` दिन जोरदार तेजी देखी गई। सप्ताह के पहले कारोबारी` दिन सोमवार को सेंसेक्स 61.05 अंक फिसलकर 76,601.96 पर खुला और 77,079.04 पर बंद हुआ। वहीं निफ्टी 13.31 अंक टूटकर 23,276.85 पर खुला और 23,411.90 के रिकॉर्ड स्तर पर बंद हुआ। हफ्ते के दूसरे कारोबारी दिन शेयर बाजार में कमजोर शुरुआत हुई। प्री ओपनिंग में बढ़त के बावजूद शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी लाल निशान पर कारोबार करते दिखे। सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 113.63 अंक की गिरावट के साथ 76,376.45 अंक पर खुला और 33.49 अंक की गिरावट के साथ 76,456.59 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 29.6 अंक फिसलकर 23,229.60 अंक पर खुला और 5.65 अंक की मामूली बढ़त के साथ 23,264.85 अंक पर बंद हुआ। बुधवार को 166 अंक की बढ़त के साथ 76,622 पर खुला और 149.98 अंकों की बढ़त के साथ 76,606.57 के स्तर पर बंद हुआ। निफ्टी 51 अंकों की मजबूती के साथ 23,316 पर खुला और 58.11 अंक चढ़कर 23,322.95 के लेवल पर बंद हुआ। गुरुवार को आईटी और रियल्टी शेयरों में मजबूती के साथ कारोबार होता दिखा। सेंसेक्स 287.51 अंकों की बढ़त के साथ 76,889.96 पर खुला और 204.33 अंकों की बढ़त के साथ 76,810.90 पर बंद हुआ। निफ्टी 77.60 अंक मजबूत होकर 23,400.55 पर खुला और 75.96 अंक मजबूत होकर 23,398.90 पर बंद हुआ। हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को घरेलू शेयर बाजार में शुरुआती बढ़त के बाद ऊपरी स्तरों से बिकवाली दिखी। सेंसेक्स 163.48 अंक टूटकर 76,611.05 पर खुला और 181.87 अंकों की बढ़त के साथ 76,992.77 पर बंद हुआ। निफ्टी 40.16 अंक फिसल कर 23,358.75 पर खुला और 66.70 अंक मजबूत होकर 23,465.60 के स्तर पर बंद हुआ।

मस्क के स्टारलिंक और अमेजन से आगे निकला जियो

- सैटकॉम सेवा के लिए इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथोराइजेशन सेंटर से मिली मंजूरी

नई दिल्ली।

जियो प्लेटफॉर्म्स को इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथोराइजेशन सेंटर से मंजूरी मिल गई है। इस अंतिम मंजूरी से कंपनी देश में सैटेलाइट कम्युनिकेशन (सैटकॉम) सर्विसेज लॉन्च कर सकेगी। यह मंजूरी ऐसे समय में मिली है जब एलन मस्क के स्वामित्व वाली स्टारलिंक और अमेजन के प्रोजेक्ट कूपर जैसी वैश्विक दिग्गज कंपनियां देश में अपनी सेवाएं शुरू करने के लिए नियामक मंजूरी का इंतजार कर रही हैं। ऐसे में अमेजन और स्टारलिंक से आगे निकलते हुए जियो प्लेटफॉर्म्स द्वारा सैटकॉम सर्विसेज दी जा सकेंगी। भारती एंटरप्राइजेज बैकड यूटेलसैट वनवेब एकमात्र अन्य कंपनी है जिसे पहले ही सभी आवश्यक मंजूरियां मिल चुकी हैं। एक बार सरकार द्वारा स्पेक्ट्रम आवंटन हो जाने के बाद जियो प्लेटफॉर्म्स अपने जॉइंट वेंचर पार्टनर लक्जमबर्ग स्थित सैटकॉम कंपनी एसईएस के साथ सैटेलाइट इंटरनेट सेवाएं प्रदान करेगा। अधिकारियों के मुताबिक ग्लोबल मोबाइल पर्सनल कम्युनिकेशन्स बाय सैटेलाइट और इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर लाइसेंस के साथ अंतरिक्ष संचार से संबंधित किसी भी गतिविधि के लिए इंडियन नेशनल स्पेस प्रमोशन एंड ऑथोराइजेशन सेंटर से ऑथोराइजेशन की जरूरत होती है। लॉन्चिंग के लिए सैटेलाइट ऑपरेट करने के लिए संचार स्थापित करने लिए एसेस ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम जैसे कई तरह की गतिविधियों के लिए ऑथोराइजेशन की जरूरत होती है। सैटेलाइट कम्युनिकेशन्स (सैटकॉम) सेवाएं डेटा और वॉयस को ट्रांसमिट करने और रिसीव करने के लिए सैटेलाइट का उपयोग करती हैं। इनका उपयोग कई तरह के क्षेत्रों में किया जा सकता है। खासतौर पर जहां ट्रेडिशनल लैंड-बेस्ड तरीके से सेवाएं नहीं दी जा सकती। इसी तरह आपदा के दौरान लोकल टेलीकॉम स्ट्रक्चर के खराब होने पर भी टेलीकॉम सेवाएं आसानी से सैटकॉम के जरिए दी जा सकती हैं। साथ ही सैटकॉम सर्विसेज इन-फ्लाइट, रेल और मैरीटाइम कम्युनिकेशन को भी सपोर्ट कर सकती हैं।

कई राज्यों में पेट्रोल-डीजल की कीमतें बदलीं

नई दिल्ली। सरकारी तेल कंपनियों ने शे निवार को पेट्रोल-डीजल की नई दरें जारी कर दी है। जिसके मुताबिक अंतरराष्ट्रीय बाजार में फ्यूल की कीमतों में गिरावट हुई तो वहीं देश के कई राज्यों में पेट्रोल-डीजल की कीमतों में बदलाव देखा गया। दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 94.76 रुपये और डीजल 87.66 रुपये प्रति लीटर, चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.73 रुपये और डीजल 92.32 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.19 रुपये और डीजल 92.13 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.93 रुपये और डीजल 90.74 रुपये प्रति लीटर है। वहीं पटना में पेट्रोल 105.16 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.03 रुपये प्रति लीटर, बेंगलुरु में पेट्रोल 99.82 रुपये और डीजल 85.92 रुपये प्रति लीटर, लखनऊ में पेट्रोल 94.63 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.74 रुपये प्रति लीटर, हैदराबाद में पेट्रोल 107.39 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.63 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़ में पेट्रोल 94.22 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.38 रुपये प्रति लीटर और जयपुर में पेट्रोल 104.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.34 रुपये प्रति लीटर है।

विस्तारा ने एयर इंडिया में विलय को लेकर जारी किया नोटिस

- 2025 की शुरुआत में पूरी हो जाएगी विलय की प्रक्रिया

नई दिल्ली। नेशनल कंपनी लॉ ट्रिब्यूनल (एन.सी.एल.टी.) चंडीगढ़ बैंच द्वारा विस्तारा एयरलाइन और टाटा समूह की एयरलाइन कंपनी एयर इंडिया को विलय की मंजूरी दिए जाने के बाद दोनों कंपनी ने विलय की प्रक्रिया शुरु कर दी है। इस बाबत विस्तारा एयरलाइन ने विलय को लेकर एक पब्लिक नोटिस भी जारी कर दिया है। जिसमें कंपनी की ओर से कहा गया है कि टाटा एस.आई.ए. एयरलाइंस लिमिटेड (ब्रांड नाम विस्तारा) जल्द ही टाटा समूह की बड़ी एयरलाइन, एयर इंडिया लिमिटेड का हिस्सा बन जाएगी। जिससे आपको एक बड़े बेड़े से जुड़े व्यापक वैश्विक नेटवर्क तक पहुंच मिल सकेगी। उधर विल्सन और विस्तारा के एक वे रिष्ठ अे धिकारी के बयान के मुताबिक एयर इंडिया और विस्तारा का विलय संभवतः 2024 के अंत या 2025 की शुरुआत तक पूरा हो जाएगा। एन.सी.एल.टी. ने दोनों एयरलाइनों को अपने नेटवर्क, मानव संसाधन और बेड़े की तैनाती को एकीकृत करने की भी अनुमति दी है। विस्तारा टाटा संस प्राइवेट लिमिटेड और सिंगापुर एयरलाइंस लिमिटेड (एस.आई.ए.) का एक संयुक्त उद्यम है, जिसमें टाटा संस की भागीदारी में 51 फीसदी हिस्सेदारी है और सिंगापुर एयरलाइंस की 49 फीसदी हिस्सेदारी है। रिपोर्ट के मुताबिक विस्तारा बांड की मूल कंपनी टाटा एस.आई.ए. एयरलाइंस लिमिटेड के रूप में रजिस्टर्ड है। सिंगापुर की प्रमुख एयरलाइन ने नवंबर 2022 में विस्तारा और एयर इंडिया के विलय की अपनी योजना की घोषणा की थी, ताकि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में एक प्रमुख पूर्ण-सेवा एयरलाइन बनाई जा सके। सौदे की शर्तों के मुताबिक ऑटो-टू-स्टील समूह टाटा के पास ज्वाइंट वेंचर का 74.9 फीसदी हिस्सा होगा, जबकि सिंगापुर एयरलाइंस के पास शेष 25.1 फीसदी हिस्सा होगा। भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सी.सी.आई.) ने सितंबर 2023 में ही विलय को मंजूरी दे दी थी। इस साल मार्च में सिंगापुर के प्रतिस्पर्धा नियामक ने भी एयर इंडिया और विस्तारा के बीच विलय को मंजूरी दे दी थी। विस्तारा ने जनवरी 2015 में वाणिज्यिक परिचालन शुरू किया था और उसके पास 70 विमानों का बेड़ा है। एयर इंडिया और विस्तारा के विलय के अलावा समूह अपनी बजट वाहक एयर इंडिया एक्सप्रेस और ए.आई.एक्स. कनेक्ट (पूर्व में एयरएशिया इंडिया) के विलय की प्रक्रिया में भी है।

जल्द मिलेगी महंगाई से राहत, जुलाई से घट सकती हैं कीमतें

- सरकार ने घरेलू बाजार में सप्लाई बढ़ाने के लिए बढ़ा दिया है आयात

नई दिल्ली।

पिछले कुछ दिनों से लगातार महंगाई बढ़ती जा रही है। थोक महंगाई की दर भी 15 महीने के शीर्ष पर पहुंच चुकी है और सब्जियों सहित तमाम तरह की दालों के दाम भी बढ़ते ही जा रहे हैं। लेकिन अब महंगाई के इस डोज से जल्द ही राहत मिलने वाली है।इसके सरकार ने अपना दांव चल दिया है और इसका असर जुलाई से आम आदमी की थाली पर भी दिखना शुरू हो जाएगा।

उपभोक्ता मामलात मंत्रालय के एक अधिकारी ने कहा कि आम आदमी को महंगाई से घबराने की जरूरत नहीं है। सरकार ने पूरी रणनीति बना ली है और जुलाई से इसमें गिरावट आनी शुरू हो जाएगी। उन्होंने कहा कि तुअर, चना और उड़द दाल की कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए बड़ी मात्रा में आयात किया जा रहा है। सरकार ने घरेलू बाजार में सप्लाई बढ़ाने के लिए आयात बढ़ा दिया है। उन्होंने कहा कि तुअर, चना और उड़द दाल की कीमतें पिछले 6 महीने से स्थिर हैं, लेकिन अपनी ऊंची दरों पर। मूंग और मसूर की कीमतें अभी नरम हैं। जून, 2024 को चना दाल की खुदरा कीमत 87.74 रुपये किलो तो तुअर दाल की 160.75 रुपये किलो और उड़द 126.67 रुपये किलो चल रहा था। मूंग दाल 118.9 रुपये और मसूर की दाल 94.34 रुपये के भाव थी। मंत्रालय ने यह आंकड़ा देश के 550 केंद्रों से जुटाया है। उन्होंने कहा कि हमें पूरी उम्मीद है कि इस बार अच्छा मानसून रहेगा और औसत से ज्यादा बारिश होगी। इससे दाल की बुआई का रकबा बढ़ेगा और किसान भी बाजार के बढ़ते भाव का फायदा उठाना चाहेंगे। पैदावार अच्छी हुई तो घरेलू बाजार में दाल की कीमतें थामने में मदद मिलेगी। सरकारी केंद्रों पर लोग 60 रुपये किलो के भाव पर भारत चना दाल खरीद सकते हैं। भारत अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए हर साल करीब 8 लाख टन तुअर दाल और 6 लाख टन उड़द दाल का आयात करता है। इसके अलावा 2023-24 में देश में करीब 33.85 लाख टन तुअर दाल का उत्पादन हुआ, जबकि खपत करीब 45 लाख टन की है। इसी तरह, चना दाल उत्पादन 115.76 लाख टन है तो खपत 119 लाख टन की है।

अथेर एनर्जी और महाराष्ट्र सरकार के बीच जल्द होगा समझौता

-कंपनी की सालाना 10 लाख दोपहिया बनाने की योजना

नई दिल्ली।

एथर एनर्जी कंपनी और महाराष्ट्र सरकार के बीच जल्द ही एक समझौता होने वाला है। कंपनी अपना तीसरा कारखाना महाराष्ट्र के औरंगाबाद में लगाने जा रही है जिसमें हर साल 10 लाख दोपहिया बनाए जा सकेंगे। सूत्रों ने कहा कि कारखाने के लिए जल्द ही राज्य सरकार के साथ समझौते पर दस्तखत किए जाएंगे। एथर एनर्जी के प्रवक्ता ने इस बारे में पूछने पर कोई जवाब नहीं दिया। कंपनी ने इस कारखाने पर कई चरणों में 1,000 करोड़ रुपये निवेश करने की योजना बना ली है। कारखाना 100 एकड़ में फैला होगा। एथर का यह कारखाना बिडकिन शहर में औरंगाबाद इंडस्ट्रियल सिटी में लगाया जाएगा, जो औरिक सिटी के नाम से भी मशहूर है। बिडकिन दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे में 10,000 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में बन रहे नए औद्योगिक स्मार्ट शहर का हिस्सा है। इस औद्योगिक क्षेत्र की 60 फीसदी जमीन इलेक्ट्रॉनिक्स, इंजीनियरिंग, टेक्सटाइल, खाद्य और रक्षा उत्पादन के लिए होगी। बाकी जमीन वाणिज्यिक और आवासीय परियोजनाओं के लिए होगी। कंपनी के दो कारखाने तमिलनाडु के होसूर में हैं, जिनमें एक वाहन असेंबली कारखाना और दूसरा बैटरी कारखाना है। असेंबली कारखाने में सालाना 4.20 लाख इलेक्ट्रिक दोपहिया बन सकते हैं। पहले एथर नए कारखाने के लिए गुजरात, तमिलनाडु और कर्नाटक में जमीन तलाश रही थी। सूत्रों ने कहा कि नए कारखाने से कंपनी को महाराष्ट्र और गुजरात जैसे प्रमुख बाजारों में इलेक्ट्रिक वाहन पहुंचाने में मदद मिलेगी। इसके साथ ही दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारे के जरिये कंपनी उत्तर भारत में भी अपने ई-स्कूटर आसानी से पहुंचा पाएगी।

औरंगाबाद कई दशक से वाहन उद्योग का केंद्र बना हुआ है। यहां बजाज ऑटो के साथ ही स्कोडा का भी कारखाना है। बजाज का इलेक्ट्रिक वाहन कारखाना महाराष्ट्र के चाकण में भी है। प्रमुख दोपहिया कंपनी टीवीएस मोटर्स का इलेक्ट्रिक स्कूटर कारखाना होसूर में है और ग्रीव्स इलेक्ट्रिक मोबिलिटी का संयंत्र तमिलनाडु के रानीपेट में है। एथर एनर्जी इस साल के अंत तक या अगले साल की शुरुआत में आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) लाने की योजना भी बना रही है।

महिंद्रा ने नए मॉडल के 10,000 यूनिट्स किए सेल

-महिंद्रा एक्सयूवी 3एक्स0 की डिलीवरी शुरू हुई थी 26 मई से

नई दिल्ली।

स्वदेशी वाहन निर्माता कंपनी महिंद्रा ने नए मॉडल के 10,000 यूनिट्स सेल कर लिए हैं। यह मई 2023 में बेची गई 5,125 यूनिट्स की तुलना में कमाल की ग्रोथ है। यहां 95 प्रतिशत की ग्रोथ है। महिंद्रा एक्सयूवी 300 भारत में कार खरीदारों के बीच काफी पॉपुलर है। हाल ही में इसके रिब्रांडेड वर्जन यानी महिंद्रा एक्सयूवी 3एक्स0 को उतारा गया था। अब लेटेस्ट सेल रिपोर्ट से कमाल के आंकड़े सामने आए हैं। महिंद्रा एक्सयूवी 3एक्स0 की डिलीवरी 26 मई से शुरू हुई थी और महज 6 दिन में कंपनी ने 10,000 यूनिट्स डिलीवर कर लिया। इससे अपडेटेड मॉडल के लिए भारी डिमांड का भी पता चलता है। इससे मॉडर्न कस्टमर्स को अपील करने वाले कई मॉडर्न फीचर्स भी दिए गए हैं। महिंद्रा एक्सयूवी3एक्स0 में 10.25-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम दिया गया है। साथ ही इसमें वायरलेस एंड्रॉयड ऑटो और ऐपल कारप्ले का भी सपोर्ट मौजूद है। एडिशनल फीचर्स की बात करें तो इसमें वायरलेस फोन चार्जर, पैनोरमिक सनरूफ और 7-स्पीकर हरमन कार्डन साउंड सिस्टम दिया गया है। भारत में इस एसयूवी की शुरुआती कीमत 7.49 लाख रुपये है। वहीं, इसके वेरिएंट की कीमत 15.49 लाख रुपये तक है। ये दोनों ही एक्स-शोरूम कीमतें हैं। आक्रामक कीमत होने के चलते अपने सेगमेंट में ये एक अच्छा ऑप्शन है।कार में कनेक्टेड कार टेक्नोलॉजी और डुअल-जोन क्लाइमेट कंट्रोल भी मौजूद है। सेफ्टी के लिहाज से इसमें लेवल 2 अडास, 6 एयरबैग्स और 360 डिग्री कैमरा भी मौजूद है। इंजन की बात करें तो ग्राहकों को यहां 1.2-लीटर पेट्रोल, 1.2-लीटर डीआई पेट्रोल और 1.5-लीटर डीजल इंजन दिया गया है।

पहली बार टी20 विश्व कप खेल रहा अमेरिका सुपर आठ में पहुंचा, पाकिस्तान बाहर

फोर्ट लाउडरहिल (एजेंसी)। । अमेरिका ने शुक्रवार को यहां आयरलैंड के खिलाफ मैच रद्द होने के बाद अपने पहले ही प्रयास में टी20 विश्व कप के ग्रुप चरण को पार करने के साथ ही पूर्व चैम्पियन पाकिस्तान को टूर्नामेंट से बाहर कर दिया। अमेरिका ने अपने पहले दो मुकाबलों में पड़ोसी देश कनाडा और मजबूत पाकिस्तान पर जीत दर्ज की थी। उसे भारत के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा लेकिन ग्रुप ए में उसका आयरलैंड के खिलाफ आखिरी मैच बारिश की भेंट चढ़ गया। इस मैच रद्द होने से वह ग्रुप से से भारत के साथ सुपर आठ चरण में पहुंच गया।

अंपायरों ने कई बार मैदान का निरीक्षण करने के बाद आउटफील्ड गीली होने के कारण मैच को रद्द करने का फैसला किया। जिसका मतलब यह हुआ कि पाकिस्तान की मजबूत टीम उस टूर्नामेंट से बाहर हो गई, जिसे उन्होंने 2009 में जीता था। अमेरिका ने ग्रुप लीग अभियान को चार मैचों में पांच अंकों के साथ समाप्त किया और पाकिस्तान अगर आयरलैंड के खिलाफ अपना आखिरी मैच जीत भी जाता है तो अधिकतम चार अंकों तक पहुंच सकता है। पाकिस्तान रविवार को न्यूयॉर्क में भारत के खिलाफ जीत के लिए 120 रन का लक्ष्य हासिल करने में नाकाम रहा था। इससे पहले, डलास में अपने शुरुआती मैच में उसे अमेरिका से सुपर ओवर में करारी हार का सामना करना पड़ा था।

अमेरिका ने लगभग टी20 विश्व कप के अपने पहले मैच में लगभग 200 रनों का पीछा करते हुए कनाडा पर शानदार जीत दर्ज की थी। उसने टी20 विश्व कप के सबसे बड़े उलटफेरों में से एक में पिछले साल के उपविजेता पाकिस्तान को झटका दिया और फिर खिताब के प्रबल दावेदार भारत को कड़ी टक्कर दी। टीम ने इससे पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला में बांग्लादेश को शिकस्त दी थी। फोर्ट लाउडरहिल फ्लोरिडा का हिस्सा है जो उष्णकटिबंधीय तूफान की चपेट में है।

अफगानिस्तान टीम का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन आना भी शेष : ट्रॉट

गयाना (एजेंसी) । अफगानिस्तान क्रिकेट टीम के मुख्य कोच जोनाथन ट्रॉट टीम के सुपर आठ में पहुंचने से बेहद उत्साहित हैं। ट्रॉट के अनुसार टीम का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन आना अभी शेष है। ट्रॉट ने कहा कि लीग स्तर में अब वेस्टइंडीज से होने वाले मैच में उनकी टीम के खेल का स्तर पता चलेगा। खेलना है। इस मुकाबले में देखना होगा कि उनकी टीम किस स्तर पर है।

ट्रॉट ने कहा, 'हमारे पास अब भी एक मैच शेष है। वेस्टइंडीज की मजबूत टीम के खिलाफ इस मैच में पता चलेगा कि हम कहां हैं। हमें ये समझना होगा कि हमने अब तक कुछ भी नहीं जीता है। हमें कुछ महत्वपूर्ण क्रिकेट मैच खेलने हैं जिनमें हमें अच्छा प्रदर्शन कर सकें।

अफगानिस्तान ने राशिद खान की कप्तान और तेज गेंदबाज फजलहक फारूकी जैसे खिलाड़ियों के अच्छे प्रदर्शन से विरोधी खिलाड़ियों पर दबाव बनाया है। फारूकी ने अब तक 12 विकेट लिए हैं। इसके अलावा टीम के. सलामी बल्लेबाज रहमानुल्लाह गुरबाज और इब्राहिम जादरान भी अच्छी बल्लेबाजी की है। उसे बारबडोस में अपने पहले सुपर 8 मुकाबले में भारत से खेलना है। .

ट्रॉट ने कहा, 'मेरा मानना है कि हम बहुत प्रतिभाशाली हैं और जब हम अपना सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट खेलते हैं तो हम किसी से भी मुकाबला कर सकते हैं। हमने यह देखा है. मुझे लगता है कि हमने अब भी अपना सर्वश्रेष्ठ खेल नहीं खेला है। अब भी कुछ चीजें हैं जिन पर हमें काम करने की जरूरत है और हम अगले कुछ दिनों में उन पर काम करेंगे जिससे प्रमुख टीमों को हराया जा सके।'

विराट के अमेरिका में असफल होने से सभी हैरान

न्यूयार्क (एजेंसी) । भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाज विराट कोहली अभी तक टी20 विश्वकप में असफल रहे हैं। विराट अब तक खेले तीनों ही मैचों में रन नहीं बना पाये हैं। वह तीन पारियों में केवल पांच रन ही बना पाये और अमेरिका के खिलाफ पहली ही गेंद पर आउट हो गये। हाल में जिस प्रकार विराट ने आईपीएल में सबसे अधिक रन बनाये थे उससे उनके यहां भी बड़े स्कोर की संभावननाएं थी। इससे उनके प्रशंसक भी हैरान हैं। ये पांच साल में पहली बार है जबकि विराट का औसत 50 से नीचे आया है।

विश्कप के अधिकतर विकेट उछाल वाले और धीमे हैं और इन पर ज्?यादातर बल्लेबाज संघर्ष करते नजर आए हैं पर विराट जैसे शीर्ष स्तर के बल्लेबाज का असफल होना हैरानी की बात है। जब वह लय में होते हैं तो विकेट से उनको फर्क नहीं पड़ता। इसके बाद भी उनकी बल्लेबाजी में आई गिरावट समझ से परे है। कुछ प्रशंसकों का मानना है कि बल्लेबाजी क्रम में बदलाव के कारण वह असफल हो रहे हैं। इंटरनेशनल क्रिकेट में विराट तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करते हैं लेकिन अभी वह पारी की शुरुआत कर रहे हैं। आयरलैंड के खिलाफ 1 और पाकिस्?तान के खिलाफ 4 रन बनाने वाले विराट के अमेरिका के खिलाफ 0 पर आउट होते ही दो अनचाहे रिकॉर्ड उनके नाम के साथ जुड़ गए। टी20 वल्?डकप में यह पहली बार है जब विराट 0 पर आउट हुए हैं और इस पारी के बाद उनका टी20 का बैटिंग औसत 50 के नीचे आ गया। 50 या इससे अधिक का बैटिंग औसत बरकरार रखने के लिए उन्?हें अमेरिका के खिलाफ मैच में कम से कम 8 रन बनाने थे लेकिन ऐसा नहीं हो सका। टी20 वल्?डकप से पहले विराट का औसत 51.75 था जो अब तक 50 से नीचे आया है। विराट ने सितंबर 2019 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ मोहाली में नाबाद 72 रनों की पारी खेलकर टी20 50 से अधिक का औसत हासिल किया था।

नेपाल टी20 विश्व कप में एक और उलटफेर करने से चूका, दक्षिण अफ्रीका से 1 रन से हारा

किंग्सटाउन (एजेंसी)। । नेपाल जीत के बेहद करीब पहुंचने के बावजूद टी20 विश्व कप में सबसे बड़ा उलटफेर करने से चूक गया और दक्षिण अफ्रीका ने आखिर में एक रन से जीत दर्ज करके टूर्नामेंट में अपना विजय अभियान जारी रखा। दक्षिण अफ्रीका की टीम पहले बल्लेबाजी करते हुए 7 विकेट पर 115 रन ही बना पाई। उसकी तरफ से रीजा हेंड्रिक्स ने सर्वाधिक 43 रन बनाए। नेपाल की तरफ से कुशाल भुर्तेल ने 19 रन देकर चार और दीपेंद्र सिंह ऐरी ने 21 रन देकर 3 विकेट लिए। नेपाल को मैच की अंतिम गेंद पर जीत के लिए दो रन की जरूरत थी।

अगर वह एक रन भी बना लेता तो मैच सुपर ओवर तक खिंच जाता लेकिन किशोर खिलाड़ी गुलशन झा तेजी से रन चुराने के प्रयास में रन आउट हो गए। इस तरह से नेपाल 7 विकेट पर 114 रन ही बना पाया। नेपाल के खिलाड़ी निराश थे क्योंकि उन्होंने आईसीसी के पूर्णकालिक सदस्य के खिलाफ 12 प्रयासों में पहली जीत दर्ज करने का सुनहरा अवसर गंवा दिया। नेपाल को एक समय 24 गेंद पर 22 रन की जरूरत थी। उसे अंतिम तीन ओवर में जीत के लिए 18 रन चाहिए थे लेकिन उसने छह गेंद और एक रन के

अंदर तीन विकेट गंवा दिए। इनमें से दो विकेट स्पिनर तबरेज शम्सी (19 रन देकर चार विकेट) ने लिए।

नेपाल को अंतिम ओवर में आठ रन चाहिए थे। ओटनील बार्टमैन के इस ओवर में गुलशन पहली दो गेंद पर रन नहीं बना पाए।इसके बाद उन्होंने चौका लगाया। जब नेपाल को तीन गेंद पर चार रन चाहिए थे तब गुलशन ने सोमपाल कामी के साथ दौड़ कर दो रन लिए। पांचवीं गेंद पर कोई रन नहीं बन पाया और अगली गेंद पर गुलशन रन आउट हो गए। आसिफ शेख के 42 रन और अनिल शाह के 27 रन की मदद से नेपाल लक्ष्य के करीब पहुंच पाया था। नेपाल के कप्तान रोहित पौडेल ने कहा,''आखिर में यह बेहद करीबी मुकाबला बन गया था। मुझे लगता है की महत्वपूर्ण मौकों पर हमने अच्छा प्रदर्शन किया। अगर हम बड़ी टीमों के खिलाफ लगातार खेलते रहे तो अगली बार हमारी जीत होगी।

विंबलडन में अब मिलेगी अधिक इनामी राशि

लंदन। अब विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट में विजेता खिलाड़ियों को अधिक इनामी राशि मिलेगी। इंग्लैंड क्लब के अधिकारियों ने इसमें कुल पुरस्कार राशि बढ़कर रिकॉर्ड 5 करोड़ पाउंड तकरीबन छह करोड़ 40 लाख डॉलर कर दी है। कुल इनामी राशि पिछले साल की तुलना में 53 लाख पाउंड 68 लाख डॉलर अधिक है ये अनुमान के अनुसार 11.9 फीसदी की बढ़त है। यह एक दशक पहले इस इस ग्रासकोर्ट ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट में प्रतियोगियों को दी गई दो करोड़ 50 लाख पाउंड वर्तमान विनिमय दर पर 3 करोड़ 20 लाख डॉलर से दोगुनी है। ऐसे में हर एक एकल विजेता को 27 लाख पाउंड 34 लाख 50 हजार डॉलर की राशि मिलेगी। ऑल इंग्लैंड क्लब की नई अध्यक्ष डेबोरा जेवांस ने कहा कि इस बार टूर्नामेंट के लिए टिकटों की मांग काफी ज्यादा है। इस साल के विजेताओं को मिलने वाली राशि में प्रत्येक वर्ग में 3,50,000 पाउंड लगभग 4,50,000 डॉलर की बढ़ोतरी हुई है ये 14.9 फीसदी की बढ़ोतरी है। एकल के पहले दौर में हारने वाले खिलाड़ियों को 2023 में 55,000 पाउंड 70,000 डॉलर से बढ़ाकर 60,000 पाउंड तकरीबन 76,000 डॉलर मिलेंगे। वहीं क्वालीफाइंग प्रतियोगिता के लिए पुरस्कार 14.9 फीसदी बढ़कर 48 लाख पाउंड तकरीबन 60 लाख डॉलर हो जाएगी।

सुपर आठ से पहले जडेजा के खराब फार्म से चिन्ताएं बढ़ी

मुम्बई । ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा टी20 विश्वकप में अब तब अपने नाम के अनुरुप प्रदर्शन नहीं कर पाये हैं। वह गेंदबाजी और बल्लेबाजी दोनो में ही अब तक विफल रहे हैं। जडेजा के नाम अब तक इस वर्ल्ड कप में न तो कोई रन है और ना ही कोई विकेट है। इसके अलावा वह अब तक फील्डिंग में भी प्रभावित नहीं कर पाए हैं। उनके नाम कोई भी रन आउट या कैच नहीं है। ऐसे में जडेजा का फॉर्म भारत के लिए चिंता का विषय है। वह टीम के अनुभवी खिलाड़ियों में से एक हैं और उनका सुपर 8 से पहले फॉर्म में आना बहुत ज्यादा जरूरी है। ऐसे में उनका लक्ष्य कनाडा के खिलाफ होने वाले मैच से सुपर आठ मुकाबलों के लिए लय हासिल करना रहेगा। जडेजा एक ऐसे खिलाड़ी हैं जो निचले क्रम पर तेजी से रन बनाने के साथ ही अहम अवसरों पर विकेट लेकर कभी भी मैच पलटने वाले खिलाड़ियों में जाने जाते हैं। ऐसे में भारतीय टीम चाहेगी कि सुपर आठ के लिए वह लय हासिल कर लें कयोंकि अभी निचले क्रम पर हार्दिक पंड्या ही एकमात्र हिटर हैं।

सैमसन को अंतिम ग्यारह में शामिल करें : श्रीसंत

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व तेज गेंदबाज श्रीसंत के अनुसार विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन को अब तक टी20 विश्व मैचों में खेलने का अवसर नहीं मिला है। ऐसे में अब उन्हें सुपर आठ के मैचों में अंतिम ग्यारह में जगह देनी चाहिये। श्रीसंत के अनुसार सैमसन को शिवम दुबे की जगह पर भी शामिल किया जा सकता है। सैमसन के आने से भारतीय टीम की बल्लेबाजी और मजबूत होगी। वह एक अच्छे विकेट और फील्डर हैं। इसके साथ ही वह किसी भी क्रम पर बल्लेबाजी करते हुए बड़ी पारी खेल सकते हैं। सैमसन को अमेरिका और वेस्टइंडीज में संयुक्त रुप से हो रहे विश्वकप के लिए भारतीय टीम में शामिल किया गया है पर अब तक उन्हें खेलने का अवसर नहीं मिला है। सैमसन को आईपीएल 2024 में शानदार प्रदर्शन के चलते टी20 विश्व कप के लिए

टीम इंडिया में जगह मिली थी। वह बांग्लादेश के खिलाफ अभ्यास मैच में सलामी बल्लेबाज के रूप में उतरे थे पर न्यूयॉर्क की कठिन पिच पर विफल रहे। विश्व कप के पहले तीन मैचों के दौरान सैमसन और युवा यशस्वी जयसवाल को भी बाहर ही बैठना पड़ा था। श्रीसंत ने कहा कि अगर प्रबंधन विराट कोहली और रोहित शर्मा के बिना नई सलामी जोड़ी तैयार करता है तो यशस्वी को उतारा जा सकता है। साथ ही कहा कि यशस्वी के आने से रोहित को आक्रामक खेलने का अवसर मिल जाएगा क्योंकि उन्हें पता रहेगा कि आगे कोई परेशानी होने पर विराट हालात को संभाल सकते हैं। श्रीसंत ने हालांकि माना कि कोई भी विजयी संयोजन को बदलना नहीं चाहता। मैं जानता हूं कि कोच राहुल द्रविड़ कठिन फैसले लेते हैं। यशस्वी को शिवम दुबे की जगह पर भी टीम में जगह मिल सकती है। साथ ही कहा कि सैमसन के आने से टीम की बल्लेबाजी और परत जोड़ेगी। वह अच्छे विकेटकीपर होने के साथ ही फील्डर भी हैं। मुझे लगता है कि हार्दिक पंड्या और रवींद्र जडेजा के साथ सैमसन को टीम में जगह दी जा सकती है। श्रीसंत का मानना है कि ऑलराउंडर रविन्द्र जडेजा की जगह पर कभी सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए क्योंकि उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में महत्वपूर्ण क्षणों में मैच जिताने वाला प्रदर्शन करके अपनी योग्यता साबित की है।

आईपीएल में मिले अनुभवों से मिली सफलता : फारूकी

तारूबा (एजेंसी) । टी20 विश्वकप में इस बार अपनी घातक गेंदबाजी से सभी को हैरान करने वाले अफगानिस्तान के बाएं हाथ के तेज गेंदबाज फजलहक फारूकी ने इसका श्रेरु आईपीएल में मिले अनुभवी को बताया है। फारूकी ने कहा कि पुरुष टी20 विश्व कप में उनका शानदार प्रदर्शन आईपीएल 2024 में सनराइजर्स हैदराबाद के लिए खेलने के दौरान हमेशा अपने कौशल को बेहतर बनाने पर काम करने के कारण ही संभव हुआ है। फारूकी ने अब तक टी20 विश्व कप में 3.50 की औसत और 3.70 की इकॉनमी से तीन मैचों में सबसे अधिक 12 विकेट लिए हैं। यहां तक कि विश्व के सभी दिग्गज गेंदबाज उनसे कहीं पीछे रह गये हैं। फारुखी ने पापुआ न्यू गिनी के खिलाफ 16 रन देकर तीन विकेट लिए।

फारूकी ने कहा, दुर्भाग्य से मुझे आईपीएल में खेलने का कोई अवसर नहीं मिला, लेकिन मैं अपने कौशल पर काम कर रहा था, अफगानिस्तान के लिए बेहतर प्रदर्शन करने के लिए अपने कौशल में सुधार कर रहा था। मैं बस अपना सौ फीसदी देने का प्रयास हूं और अपने कौशल का समर्थन करता हूं। मेरे लिए, मेरी मानसिकता सरल है। जब भी मैं अंडर-19 या अंडर-16 में खेलता था, तो मुझे लगता था-मैं बड़ा आदमी नहीं हूं। मैं कोई बड़ा और लंबा और बहुत तेज गेंदबाजी करने वाला व्यक्ति नहीं हूं। उस समय मैं दूसरों से कुछ अलग करने के लिए अपने कौशल को बेहतर बनाने के बारे में सोच रहा था। मैं स्विंग गेंदबाजी करना सीखने जा रहा था और अब मेरे लिए यह आसान है।

उन्हें टीम के गेंदबाजी सलाहकार ड्वेन ब्रावो से भी काफी फायदा हुआ है। ब्रावो और फारूकी यूएई की आईएलटी20 लीग में अबू धाबी नाइट राइडर्स और अबू धाबी टी10 लीग में दिल्ली बुल्स के लिए एक साथ खेले हैं। उन्होंने खुलासा किया कि डेथ ओवरों में दबाव की स्थिति से निपटने के दौरान अफगानिस्तान के गेंदबाजों पर ब्रावो के मार्गदर्शन का काफी प्रभाव पड़ा है। उन्होंने डीजे ब्रावो के बारे में कहा, मैं पिछले चार सालों से उनके साथ हूं। मैं हर बार एक ही टीम में खेल रहा हूं। वह हमें डेथ ओवरों में कैसे गेंदबाजी करनी है, महत्वपूर्ण परिस्थितियों में कैसे गेंदबाजी करनी है, इसके लिए कुछ टिप्स देते हैं।

दीक्षा डागर की शानदार शुरुआत, इटालियन ओपन में संयुक्त चौथे स्थान पर

नई दिल्ली। भारतीय गोल्फर दीक्षा डागर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए इटालियन ओपन गोल्फ टूर्नामेंट के पहले दौर में पांच अंडर 67 का कार्ड खेला जिससे वह संयुक्त चौथे स्थान पर हैं। पहले दौर के बाद दीक्षा ऑस्ट्रेलिया की कर्स्टन रूडगेली, स्पेन की फातिमा फर्नांडीज कैनो और स्विट्जरलैंड की टिफनी अराफी से एक शॉट पीछे हैं। इस टूर्नामेंट में भाग ले रही भारत की अन्य खिलाड़ियों का प्रदर्शन हालांकि अच्छा नहीं रहा। दीक्षा के बाद वाणी कपूर (72) का नंबर आता है जो संयुक्त 30वें स्थान पर हैं। उनके अलावा प्रणवी उर्स और त्वेसा मलिक 73-73 के स्कोर के साथ संयुक्त 41वें और रिधिमा दिलावरी (75) संयुक्त 76वें स्थान पर हैं।

अदिति अशोक मीजर क्लासिक एलपीजीए में संयुक्त 16वें स्थान पर

भारतीय गोल्फर अदिति अशोक यहां मीजर एलपीजीए क्लासिक के दूसरे दौर में दो अंडर 70 का कार्ड खेलकर संयुक्त 16वें स्थान पर है। बेंगलुरु की यह खिलाड़ी अगस्त में अपना तीसरा ओलंपिक खेल खेलने के लिए तैयार है। ऐसे में उनके लिए कुछ लय हासिल जरूरी होगा। अदिति ने छठे, आठवें और 18वें होल में बर्डी लगाकर 70 का कार्ड खेला। उनका कुल स्कोर छह-अंडर 138 का है। वह तीन बार की एलपीजीए टूर विजेता एली इविंग से पांच शॉट पीछे हैं।

उचित क्रिकेट खेलने पर दुनिया की किसी भी टीम को हरा सकता है अमेरिका: आरोन जोन्स

लॉडरहिल (अमेरिका) (एजेंसी)। अमेरिका के उप कप्तान आरोन जोन्स ने कहा कि अगर उनकी टीम उचित तरीके से और अपनी क्षमता के अनुसार क्रिकेट खेलती है तो वह दुनिया की किसी भी टीम को हरा सकती है। अमेरिका ने आयरलैंड के खिलाफ मैच बारिश की भेंट चढ़ जाने के बाद टी20 विश्व कप के सुपर 8 में जगह बनाई। पहली बार इस टूर्नामेंट में भाग ले रहे अमेरिका ने ग्रुप ए में कनाडा को सात विकेट से और पाकिस्तान को सुपर ओवर में हराया था। जोन्स ने संवाददाता सम्मेलन में कहा,''निश्चित तौर पर हम सुपर 8 की चुनौती को लेकर उत्साहित हैं। पिछले दो सप्ताह में हमने दिखाया कि हम प्रतिस्पर्धा पेश कर सकते हैं और आईसीसी के कुछ पूर्णकालिक सदस्य देशों को हरा सकते हैं।''

सुपर 8 में अमेरिका का सामना दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज और संभवतः इंग्लैंड से होगा तथा जोन्स ने कहा कि उनकी टीम इन बड़ी टीमों को कड़ी चुनौती देने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा,''ईमानदारी से कहूं तो अधिकतर लोगों ने अमेरिकी क्रिकेट पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया। शायद पूरी दुनिया को इससे पहले पता ही नहीं था कि हमारे पास कितनी प्रतिभा है और हमारे खिलाड़ी कितना अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। यह हमारे लिए थोड़ा फायदेमंद रहा लेकिन निश्चित तौर पर अगर हम उचित क्रिकेट खेलते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि हम दुनिया की किसी भी टीम को हरा सकते हैं तो हम ऐसा कर सकते हैं।''

अमेरिका ने सुपर 8 में जगह बनाकर 2026 में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए भी क्वालीफाई कर लिया है। जोन्स ने कहा,''यह हमारे लिए बहुत मायने रखता है। पिछले दो वर्षों से हम विश्व कप में खेलने, पूर्णकालिक सदस्य देशों के खिलाफ अधिक मैच खेलने और इसी तरह के विषयों पर बात कर रहे थे। हमने यहां अच्छा प्रदर्शन किया और सुपर 8 में प्रवेश करना शानदार है।'' उन्होंने कहा,'' हमने 2026 में होने वाले विश्व कप के लिए भी क्वालीफाई कर लिया है और यह हमारे लिए बड़ी उपलब्धि है। यह हमारे लिए ही नहीं अमेरिका के प्रशंसकों और नई पीढ़ी के लिए भी अच्छी खबर है।

मेजबान जर्मनी ने स्कॉटलैंड को 5-1 से हराकर शानदार शुरुआत की

म्यूनिख। फ्लोरियन विर्ट्ज़ और जमाल मुसियाला के पहले हाफ में किए गए गोल की मदद से जीत का मंच तैयार करने वाले मेजबान जर्मनी ने 10 खिलाड़ियों के साथ खेल रहे स्कॉटलैंड को 5-1 से करारी शिकस्त देकर यूरोपीय फुटबाल चैंपियनशिप (यूरो 2024) में अपने अभियान की शानदार शुरुआत की। विर्ट्ज़ ने दसवें मिनट में जर्मनी के लिए पहला गोल किया जबकि मुसियाला ने 19वें मिनट में उसकी बढ़त दोगुनी कर दी। काई हैवर्ट ने पहले हाफ के इंजरी टाइम में पेनल्टी को गोल में बदलकर मध्यांतर तक जर्मनी को 3-0 से आगे कर दिया। जर्मनी को डिफेंडर रयान पोर्टियस की गलती के कारण यह पेनल्टी मिली थी, जिन्हें रेफरी ने लाल कार्ड दिखाकर बाहर कर दिया था। इस कारण स्कॉटलैंड को दूसरे हाफ में 10 खिलाड़ियों के साथ खेलना पड़ा था। मध्यांतर के बाद सब्सटीट्यूट निकोलस फुलक्रग ने 68वें मिनट और एमरे कैन ने इंजरी टाइम में गोल करके जर्मनी की बड़ी जीत सुनिश्चित की। स्कॉटलैंड एंटोनियो रोडिगर के 87वें मिनट में किए गए आत्मघाती गोल से खाता खोल पाया। जर्मनी के कप्तान इल्के गुंडोगन ने मैच के बाद कहा,''हम वास्तव में इसी तरह की शुरुआत चाहते थे। मैं मैच से पहले भी जीत के प्रति अश्वस्त था। हमें दर्शकों का भरपूर समर्थन मिल रहा था और हमने वैसा प्रदर्शन किया जैसा हम चाहते थे।

न्यूजीलैंड के खराब प्रदर्शन के बाद ट्रेंट बोल्ट ने किया बड़ा ऐलान, संन्यास को लेकर कह दी ये बात

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप में 2024 में न्यूजीलैंड टीम का प्रदर्शन निराशाजनक रहा है। कीवी टीम पहले ही सुपर 8 की रेस से बाहर हो चुकी है। ग्रुप सी में मौजूद इस टीम ने अब तक 3 मैच खेले और उन्हें 2 में हार झेलनी पड़ी। वहीं न्यूजीलैंड टीम के इस निराशाजनक प्रदर्शन के बाद ट्रेंट बोल्ट ने बड़ा कदम उठाया है। उन्होंने टी20 क्रिकेट से संन्यास का मन बना लिया है। युगांडा के खिलाफ जीत के बाद ट्रेंट बोल्ट ने कहा कि ये उनका आखिरी टी20 वर्ल्ड कप है।

बोल्ट 2011 में पदार्पण करने के बाद से न्यूजीलैंड टीम के अहम सदस्य रहे है। उन्हें टी20 विश्व कप , एकदिवसीय विश्व कप और टेस्ट चैम्पियनशिप का फाइनल खेलने का अनुभव है। उन्होंने ने 2014 से चार टी20 विश्व कप में भाग लिया है। बोल्ट ने युगांडा पर न्यूजीलैंड की नौ विकेट की जीत के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, '' मैं अपनी बात करूं तो यह मेरा आखिरी टी20 विश्व कप होगा। मुझे बस इतना ही कहना है।''

युगांडा के खिलाफ मैच से पहले ही न्यूजीलैंड की टीम विश्व कप के सुपर आठ दौर से बाहर हो गयी थी। टीम अब ग्रुप सी में अपने आखिरी मैच में पापुआ न्यू गिनी का सामना करेगी जो टी20 विश्व कप में 34 साल के इस बायें हाथ के गेंदबाज का आखिरी मैच होगा। उन्होंने सुपर आठ से बाहर होने पर कहा, '' निश्चित रूप से हम टूर्नामेंट में ऐसी शुरुआत नहीं चाहते थे। इसे पचा पाना कठिन है। हम निराश है कि आगे नहीं बढ़ सके लेकिन जब भी आपको देश का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलता है, तो यह गर्व का क्षण होता है।''

इस प्रारूप के विश्व कप में न्यूजीलैंड ने शानदार प्रदर्शन किया है। इस सत्र से पहले टीम 2014 के बाद से हर बार सेमीफाइनल में पहुंचने में सफल रही है। उन्होंने कहा कि, देश के लिए खेलने को लेकर ड्रेसिंग रूम में बहुत गर्व का माहौल है। पिछले कई वर्षों में हमारे रिकॉर्ड बेहतरीन रहे हैं। दुर्भाग्य से बीते सप्ताह हम अच्छा नहीं खेल सके और क्वालीफिकेशन से बाहर हो गये।

दीप दर्शन विद्या संकुल सीबीएसई बोर्ड के बच्चों ने मनाया फादर्स डे

सुरत भुमि, सूरत। हर साल जून के तीसरे रविवार को फादर्स डे मनाया जाता है इस अवसर पर दीप दर्शन विद्या संकुल सीबीएसई बोर्ड के बच्चों द्वारा अलग-अलग प्रकार की ग्रीटिंग कार्ड बनाकर अपने अपने पिताजी को मैसेज दिया। यह दिन उन पिताओं के प्रति आभार प्रकट करने का एक शानदार अवसर है जो हमारे मार्गदर्शक ,रक्षक और आदर्श हैं। डिंडोली स्थित दीप दर्शन विद्या संकुल सीबीएसई बोर्ड के बच्चों ने फादर डे के अवसर पर ग्रीटिंग कार्ड बनाकर अपनी संवेदना अपने पिता के प्रति प्रेम को व्यक्त किया बच्चों ने रंग बिरंगी एवं खूब सुंदर कार्ड बनाकर फादर डे को मनाया!हर साल स्कूल में फादर्स डे मनाया जाता है क्योंकि छात्र अपने माता-पिता से प्यार करते हैं और उनका सम्मान करते हैं।

वरदान रेकी का हुआ आयोजन

सुरत भुमि, सूरत। नारायण रेकी परिवार एवं सोल शाईन वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा वरदान रेकी का आयोजन शनिवार को दोपहर तीन बजे से केनाल रोड़ स्थित शांतम हॉल में किया गया। जिसमें मन, शरीर एवं आत्मा को शुद्धि कर स्वस्थ बनाने की चिकित्सा के बारे में बताया। आयोजन में नारी रत्न राजेश्वरी मोदी "राजदीदी" ने बताया कि हमारे शब्द ही हमारी जद्दिगी बनाते है। हर घर में सुख शांति हो, हर इंसान तन, मन, धन, संबंधों से परिपूर्ण हो। इस दौरान अनेकों लोग उपस्थित रहें।

सेमिनार आज - नारायण रेकी परिवार एवं सोल शाईन वेलफेयर ट्रस्ट द्वारा "आजीवन खुश रहने का मंत्र" पर सेमिनार का आयोजन आज दोपहर दो बजे से इंडोर स्टेडियम में किया जाएगा। जिसमें जीवन को सार्थक बनाने एवं मार्गदर्शन करने पर व्याख्यान दिया जाएगा।

द रेडियंट इंटरनेशनल स्कूल ने खेलमहाकुंभ राज्यस्तरीय 2024 तैराकी प्रतियोगिता में शानदार सफलता

सूरत। शहर के प्रसिद्ध द रेडियंट इंटरनेशनल स्कूल, जहांगीराबाद ने खेलमहाकुंभ राज्य स्तरीय 2024 तैराकी प्रतियोगिता में शानदार सफलता हासिल कर सूरत को गौरवान्वित किया है। जिसमें ताशा मोदी, देवर्ष सैलोर और श्रेया सारंग ने असाधारण और आश्चर्यजनक उपलब्धियां हासिल की हैं। जो मेहनत, लगन और जुनून का सबूत है।

जिसमें ताशा मोदी ने अंडर-17, 100 मीटर फ्रीस्टाइल में सिल्वर और 200 मीटर-400 मीटर फ्रीस्टाइल में गोल्ड मेडल जीता। और 4×100 मीटर मेडले रिले में कांस्य पदक प्राप्त किया। देवर्ष सायलर ने लड़कों की अंडर-17 100 मीटर और 200 मीटर ब्रेस्टस्ट्रोक में रजत पदक और राज्य स्तरीय एक्वाथलॉन में पहला स्थान हासिल किया। और श्रेया सारंग ने अंडर-17 4×100 मीटर एक्वाथलॉन में कांस्य पदक जीतकर द रेडियंट इंटरनेशनल स्कूल की रैंकिंग में शीर्ष स्थान हासिल किया।

इसके साथ ही रेडियंट स्कूल के अग्राक्रिया सिंह की उपलब्धि भी सराहना की पात्र है. उन्होंने खेलमहाकुंभ 2024 राज्य स्तरीय गर्ल्स अंडर-17, 52 से 55 किग्रा में जीत हासिल की। ताइक्वांडो प्रतियोगिता में कांस्य पदक जीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया है। इस अवसर पर स्कूल के अध्यक्ष श्री रामजीभाई मांगुकिया, उपाध्यक्ष जिग्नेशभाई मांगुकिया, प्रबंध निदेशक किशनभाई मांगुकिया, कैंपस निदेशक आशीष वाघानी और प्रिंसिपल तर परमार ने सभी विजेताओं को बधाई दी और उनके सुनहरे भविष्य की कामना की।

अलिखित नायकों का उत्सव: व्हाइट लोटस इंटरनेशनल स्कूल में दिल से मनाया गया फादर्स

सुरत भुमि, सूरत। एक पिता अक्सर हमारे जीवन का मौन नायक होता है, उसका प्यार स्थिर और अटल होता है, भले ही वह अनकहा हो। वह वह चट्टान है जिस पर हम अपने सपनों का निर्माण करते हैं, जीवन के तूफानों में हमारा मार्गदर्शन करने वाला स्थिर हाथ। हमारी पहली कदमों से ही उसकी ताकत और त्याग हमारे साहस और धैर्य की नींव रखते हैं। उसकी बुद्धिमत्ता, जो शांत क्षणों और जीवन के पाठों के माध्यम से दी जाती है, हमारे मूल्यों और निर्णयों को आकार देती है। एक पिता की उपस्थिति निःस्वार्थ प्रेम का निरंतर अनुस्मारक है, बिना किसी अपेक्षा के देने वाला। यद्यपि उसका प्यार हमेशा शब्दों में व्यक्त नहीं होता, लेकिन हर देखभाल, सुरक्षा और समर्थन के कार्य में गहराई से महसूस किया जाता है। उसकी आँखों में, हमें गर्व दिखता है; उसकी गले में, हमें सुरक्षा मिलती है; और उसके पदचिह्नों में, हमें अपने सर्वश्रेष्ठ स्वरूप की ओर जाने का रास्ता मिलता है। एक पिता का प्यार एक अनमोल उपहार है, एक विरासत जिसे हम अपने दिलों में आगे बढ़ाते हैं, उस आदमी के लिए हमेशा आभारी जो हमें सिखाता है कि वास्तव में जीना और प्यार करना क्या होता है।

हमारे जीवन में पिता की महत्वपूर्ण भूमिका को सम्मानित करने और उसकी सराहना करने के लिए, व्हाइट लोटस इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों ने फादर्स डे मनाया और कई कला और शिल्प गतिविधियों का आयोजन किया। इन रचनात्मक प्रयासों ने बच्चों को अपने प्यार और आभार व्यक्त करने का एक माध्यम प्रदान किया, जिससे पिता और बच्चों के बीच के बंधन को मजबूत करने में मदद मिली और बच्चों को अपनी कलात्मक प्रतिभाओं का पता लगाने का अवसर मिला। ये गतिविधियाँ न केवल स्थायी यादें बनाई बल्कि उनके पिता के योगदान और बलिदान के लिए एक गहरी सराहना भी विकसित की।

हमारे किंडरगार्टन और प्राथमिक कक्षा के छात्रों ने अपने पिताओं के लिए कागज के बटुए बनाए, जिनमें सबसे बड़ा खजाना भरा था- प्यार और आभार के दिल से लिखे संदेश। मिडिल स्कूल के छात्रों ने कार्ड बनाए और अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हुए अपने पिताओं की अद्भुत विशेषताओं से सजे पिनव्हील बनाए। वरिष्ठ कक्षा के छात्रों ने भी कार्ड बनाए, जबकि कुछ ने टी-शर्ट पेंट की या पत्थर कला के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। यह दिन स्कूल में एक आनंदमय कृतज्ञता के माहौल से भरा था, हमें जीवन में पिता की महत्वपूर्ण भूमिका और हमारे कितने भाग्यशाली होने की याद दिलाते हुए।

हंसी, कहानियां और फिल्में: एयरटेल डीटीएच के साथ फादर्स डे को खास बनाएं

गुजरात। फादर्स डे बस आने ही वाला है, और पिता-पुत्र के रिश्ते को बखूबी चित्रित करने वाली फिल्में देखने से जश्न मनाने का इससे बेहतर तरीका क्या हो सकता है? इस फादर्स डे एयरटेल डीटीएच पर एयरटेल मजामा (गुजराती) (एलसीएन 577) पर आपके लिए कुछ खास है। इस अवसर पर, एयरटेल डीटीएच ने विशेष दिन का जश्न मनाने के लिए कुछ विशेष रूप से क्यूरेटेड स्ट्रीमिंग कार्यक्रम पेश किए हैं।

गुजराती सिनेमा पर ध्यान केंद्रित करते हुए, एयरटेल डीटीएच ने 7.2 की आईएमडीबी रेटिंग के साथ मल्हार ठाकर, मानसी रच और मोनाल गज्जर, यश सोनी, जानकी बोर्डीवाला और नदी दोश की स्क्रीनिंग निर्धारित की है, साथ ही 8.1 की आईएमडीबी रेटिंग के साथ विकिडा नो वरघोडा की भी स्क्रीनिंग की है। फादर्स डे के लिए एयरटेल मजामा चैनल पर 5.8 की आईएमडीबी रेटिंग के साथ संजय गोराडिया, रीना सोनी और हार्दिक अहीर अभिनीत रौनक कामदार और बाप नो बागीचो। इन फिल्मों में ऐसी झलकियाँ और कहानियाँ हैं जहाँ पिता के अपने बच्चों के साथ खूबसूरत रिश्तों को उजागर किया गया है।

फिल्मों के साथ-साथ, गुजराती मनोरंजन मीडिया में नाटकों की लोकप्रिय मांग और रुचि के आधार पर, एयरटेल डीटीएच च्फादर्स डेज नामक एक नाटक का भी प्रीमियर करेगा। प्रताप सचदेव, मीनल कार्पे, राहुल अंतानी, ज़ील मेहता, प्रमित बारोट, ध्रुव मोटा और प्रसाद पौडवाल सहित प्रसिद्ध थिएटर अभिनेताओं द्वारा अभिनीत, कहानी इस बात के इर्द-गिर्द घूमती है कि पिता और पुत्रों की दो पीढ़ियों के बीच संबंध कैसे विकसित होते हैं।

अग्रवाल समाज ट्रस्ट की वार्षिक साधारण सभा आज

सुरत भुमि, सूरत। अग्रवाल समाज ट्रस्ट की 44वीं वार्षिक साधारण सभा का आयोजन रविवार को शाम चार बजे से घोड़-दौड़ रोड़ स्थित अग्रवाल समाज भवन के बालकिशन टोडरमल पोद्दार हॉल में किया जाएगा। सभा में वित्तीय वर्ष 2023-24 के हिसाब का लेखा-जोखा एवं कार्यकलाप प्रस्तुत किया जाएगा। साथ ही ट्रस्ट के आगामी कार्यकलापों एवं योजनाओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा।

कोटक लाइफ इंश्योरेंस ने लॉन्च किया कोटक जेन 2 जेन प्रोटेक्ट

भारत। कोटक महिंद्रा लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड ("कोटक लाइफ") ने आज अपनी नई सुरक्षा योजना कोटक जेन2जेन (GenwGen) प्रोटेक्ट को लॉन्च करने की घोषणा की है। यह उत्पाद एक योजना के साथ दो पीढ़ियों को कवर करने के विकल्प के साथ इंडस्ट्री की ऐसी पहली सुविधा प्रदान करता है, जो इस सुरक्षा की विरासत को आगे बढ़ाता है।

सर्वाइवल (उत्तरजीविता) पर प्रीमियम लाभ की 100 फीसदी गारंटीकृत वापसी के साथ आने वाला, कोटक जेन2जेन प्रोटेक्ट बच्चे को कम्पलीट रिस्क कवर (पूर्ण जोखिम कवर) ट्रांसफर करने की सुविधा प्रदान करता है, जब माता-पिता (प्राथमिक बीमाधारक) 60 या 65 साल के हो जाते हैं। इसके अलावा, यह रिस्क कवर बच्चे के साथ 60 साल की उम्र तक बना रहता है।

यह उत्पाद वेलनेस बेनेफिट और एक्सीडेंटल डेथ बेनेफिट (दुर्घटना मृत्यु लाभ), स्थायी विकलांगता की स्थिति में लाभ और गंभीर बीमारी प्लस जैसे राइडर्स के माध्यम से व्यापक कवरेज भी प्रदान करता है। महिला पॉलिसीधारकों के लिए, कोटक जेन2जेन प्रोटेक्ट अतिरिक्त 5 फीसदी डेथ बेनेफिट प्रदान करता है।

कोटक महिंद्रा लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के एमडी, महेश बालासुब्रमण्यम ने कहा कि "एक संगठन के रूप में, हमारा समर्पण उन उत्पादों को नया और क्यूरेट करने पर है, जो हमारे ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूरा करते हैं। कोटक जेन2जेन प्रोटेक्ट एक ऐसा उत्पाद है, जिसके माध्यम से हमारे ग्राहक एक ही टर्म प्लान के साथ दो पीढ़ियों को सुरक्षित कर सकते हैं। इस उत्पाद की सोच हम भारतीयों द्वारा परिवार, परंपरा और विरासत को दिए जाने वाले महत्व से आती है।

मूल्यों, ज्ञान और शिक्षा को अगली पीढ़ी तक पहुंचाना हमारी भारतीय संस्कृति में गहराई से समाहित है। यहां एक उत्पाद है जो इन मूल्यों के महत्व को समझता है। मुझे यकीन है कि कोटक जेन2जेन प्रोटेक्ट जैसे इनोवेटिव उत्पाद प्रोटेक्शन कैटेगरी का विस्तार करेंगे और 2047 तक आईआरडीएआई (IRDAI) के 'सभी के लिए बीमा' के उद्देश्य में महत्वपूर्ण योगदान देंगे"।

लाईफस्टाईल पर शुरू हो रही है सीज़न की सबसे बी सेल

भारत के अग्रणी फैशन डेस्टिनेशंस में से एक लाईफस्टाईल पर 7 जून से सीजन की सबसे बड़ी सेल शुरू हो रही है इस सेल में शॉपर्स को टॉप फैशन ब्रांड्स के लेटेस्ट स्टाईल्स पर 50 प्रतिशत तक की छूट मिलेगी। प्रमुख नेशनल और इंटरनेशनल ब्रांड्स के लेटेस्ट ट्रेंड्स और फैशन विकल्पों के विशाल कलेक्शन के साथ इस लाईफस्टाईल सेल में फैशन प्रेमियों को अपनी वॉर्डरोब के लिए अनेकों विकल्प मिलेंगे।

इस लाईफस्टाईल कलेक्शन में स्प्रिंग-समर के सर्वश्रेष्ठ परिधान शामिल हैं जिनमें फ्लोरल प्रिंट्स और पैस्टल ह्यू का आधिक्य है। इसके स्टाईलिश संग्रह में महिलाओं के लिए ट्रेंडिंग शिफ्ली और क्रोशे ड्रेस, विंटेज ब्लूम को-ऑर्ड सेट, स्टाईलिश डेनिम ट्रेंड्स और पुरुषों के लिए प्रिंटेड शर्ट की विशाल श्रृंखला, ऑल-न्यू लूज़ फिट पैंट, एवं आकर्षक टी शर्ट बेहतरीन डिस्काउंट के साथ मिल रहे हैं। यहाँ आकर फैशनप्रेमियों को गर्मी में भी अपना कूल लुक बनाए रखने का तरीका मिलेगा।

लाईफस्टाईल की सेल में ट्रेंड सेटर 100 से ज्यादा नेशनल और इंटरनेशनल ब्रांड्स के नए ट्रेंड्स की शॉपिंग करने का बेहतरीन अवसर पाएंगे। इन ब्रांड्स में मेलांज, जिंजर, फोरका, कोड, एंड, बीबा, ग्लोबल देसी, जैक एंड जोन्स, इंडियन टेरेन, पार्क एवेन्यू, पेपे जीन्स, प्यूमा, एडिडास, फॉसिल, अरमानी एक्सचेंज, मेबेलीन, लॉरिआल आदि शामिल हैं।

इस सेल में शॉपर्स मौसम के अनुकूल अपैरल, ब्यूटी, वॉच, फ्रेंग्रेंस, फुटवियर, हैंडबैग्स, और एक्सेसरीज आकर्षक मूल्य में खरीद सकेंगे। इसके अलावा, एसबीआई कार्ड धारकों के लिए एक विशेष ऑफर है, जिसके अंतर्गत उन्हें कम से कम 7000रु. की शॉपिंग करने पर 5 प्रतिशत की इंस्टेंट छूट दी जा रही है। नियम व शर्तें लागू। यह लाईफस्टाईल सेल सभी लाईफस्टाईल स्टोर्स, ऑनलाईन और एन्ड्रॉयड एवं आईफोन यूज़र्स के लिए लाईफस्टाईल ऐप पर उपलब्ध होगी।

"विक्स की गोली अब हो गई बड़ी" – विक्स ने पॉवरहाउस रनवीर सिंह के साथ सबसे बड़ी खबर का खुलासा किया

विक्स ने पॉवरहाउस ब्रांड एंबेसडर रनवीर सिंह के साथ आज विक्स की सबसे बड़ी खबर, "विक्स की गोली अब हो गई बड़ी" की घोषणा की, जिसमें लगभग दो दशकों में भारत के प्रतिष्ठित त्रिकोणीय विक्स कफ ड्रॉप्स के 'डबल पॉवर्ड परिवर्तन' का अनावरण किया गया।

पीएंडजी इंडिया में कैटेगरी लीडर, कंज्यूमर हैल्थकेयर, साहिल सेठी ने कहा, "ब्रांड की प्रतिष्ठित जिंगल, 'विक्स की गोली लो, खिच खिच दूर करो' फौरन उस पुराने समय की यादों में ले जाती है, जब विक्स कफ ड्रॉप्स ने सन 1960 से भारतीयों की कई पीढ़ियों को बिना खिच-खिच के बोलने में मदद की थी। हमारे ग्राहक क्या चाहते हैं, यह समझकर और उनके द्वारा दी गई जानकारी को अपने उत्पाद के फॉर्मूलेशन और पैकेजिंग में शामिल करके इस विरासत को मजबूत बनाने की प्रतिबद्धता के साथ हम दशकों में सबसे बड़ी खबर पेश करने के लिए उत्साहित हैं कि हम अपनी प्रतिष्ठित त्रिकोणीय विक्स कफ ड्रॉप्स का पहला डबल पॉवर्ड परिवर्तन, विक्स डबल पॉवर कफ ड्रॉप्स लेकर आए हैं। खाँसी और गले की खराश से राहत पाने के लिए बड़े आकार में अपनी पसंदीदा कफ ड्रॉप लेने की ग्राहकों की जरूरत और उनकी प्रतिक्रिया के आधार पर बनाई गई हमारी 'विक्स डबल पॉवर कफ ड्रॉप्स' एक बड़ी गोली है, जो बड़ी राहत प्रदान करती है। अब विक्स की गोली खाओ, बड़ी राहत पाओ।"

ब्रांड के बड़ी राहत के वायदे के बारे में डॉ. जसप्रीत कोच्चर, डायरेक्टर, विक्स रिसर्च एंड डेवलपमेंट ने कहा, "नया विक्स डबल पॉवर कफ ड्रॉप खाँसी और खराब गले से राहत देने के लिए एक बेहतर उत्पाद है। इसमें प्रभावशाली और प्रसिद्ध आयुर्वेदिक तत्वों, जैसे मेंथल, यूकेलिप्टस तेल और कपूर का प्रमाणित मिश्रण है। यह नया डिज़ाइन किया गया फॉर्मूलेशन 2× मेंथल के साथ ज्यादा शक्तिशाली है और यह तीन वैरिएंट्स - ठंडक देने वाले मेंथल, आरामदायक शहद और राहत देने वाली अदरक में आता है, जो भारतीय ग्राहकों के साथ विकसित किया और परखा गया है। अब ग्राहक बेहतर, तेज और लंबे समय तक राहत पाने के लिए ज्यादा कूलिंग और शानदार स्वाद के साथ अपनी पसंदीदा कफ ड्रॉप्स ले सकते हैं। इसे ही हम बड़ी राहत कहते हैं।"

'सबसे बड़ी खबर' कोई और नहीं, बल्कि विक्स कफ ड्रॉप्स का चेहरा, सुपरस्टार रनवीर सिंह एक नए आकर्षक टेलीविजन कमर्शियल के साथ लेकर आए।

विक्स कफ ड्रॉप्स के साथ अपने सहयोग के बारे में, पॉवरहाउस रनवीर सिंह ने कहा, "विक्स की गोली हमारी संस्कृति का हिस्सा है, यह खिच-खिच दूर करने के लिए हमेशा गो-टू- रेमेडी रही है। मुझे विक्स जैसे प्रतिष्ठित ब्रांड को पेश करने पर गर्व है। मैं डबल पॉवर कफ ड्रॉप्स के लिए उत्साहित हूँ। यह टीवीसी बहुत क्यूट और शानदार है। मुझे उम्मीद है कि यह दर्शकों को बहुत पसंद आएगा।

साहिल सेठी ने कहा, "125 सालों से ज्यादा समय से प्रभावशाली राहत और देखभाल की विरासत के साथ दुनिया का सबसे ज्यादा बिकने वाला कफ एंड कोल्ड ब्रांड, विक्स भारत के लिए लगातार इनोवेट कर रहा है ताकि ऐसे बेहतर उत्पाद प्रदान किए जा सकें, जो दोस्तों व परिवारों को एक दूसरे का ख्याल रखने में समर्थ बनाते हैं।"

स्वात्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक: संजय रमाशंकर मिश्रा द्वारा ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सुरत (गुजरात) प्रिन्टर्स- भूनेश्वरा प्रिन्टर्स, प्लाट नं. 29, परमानन्द इण्डस्ट्रीयल सोसायटी, चौकसी मील के पास, उधना मगदल्ला रोड़ (गुजरात) से मुद्रित एवं ११४, न्यू प्रियंका टाउनशीप अपार्टमेन्ट, डिंडोली, उधना, सूरत (गुजरात) से प्रकाशित। कार्यालय फोन: 0261-2274271, (न्यायिक क्षेत्र सूरत रहेगा)